वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

मई (01-15), 2024

हिन्दू विश्व

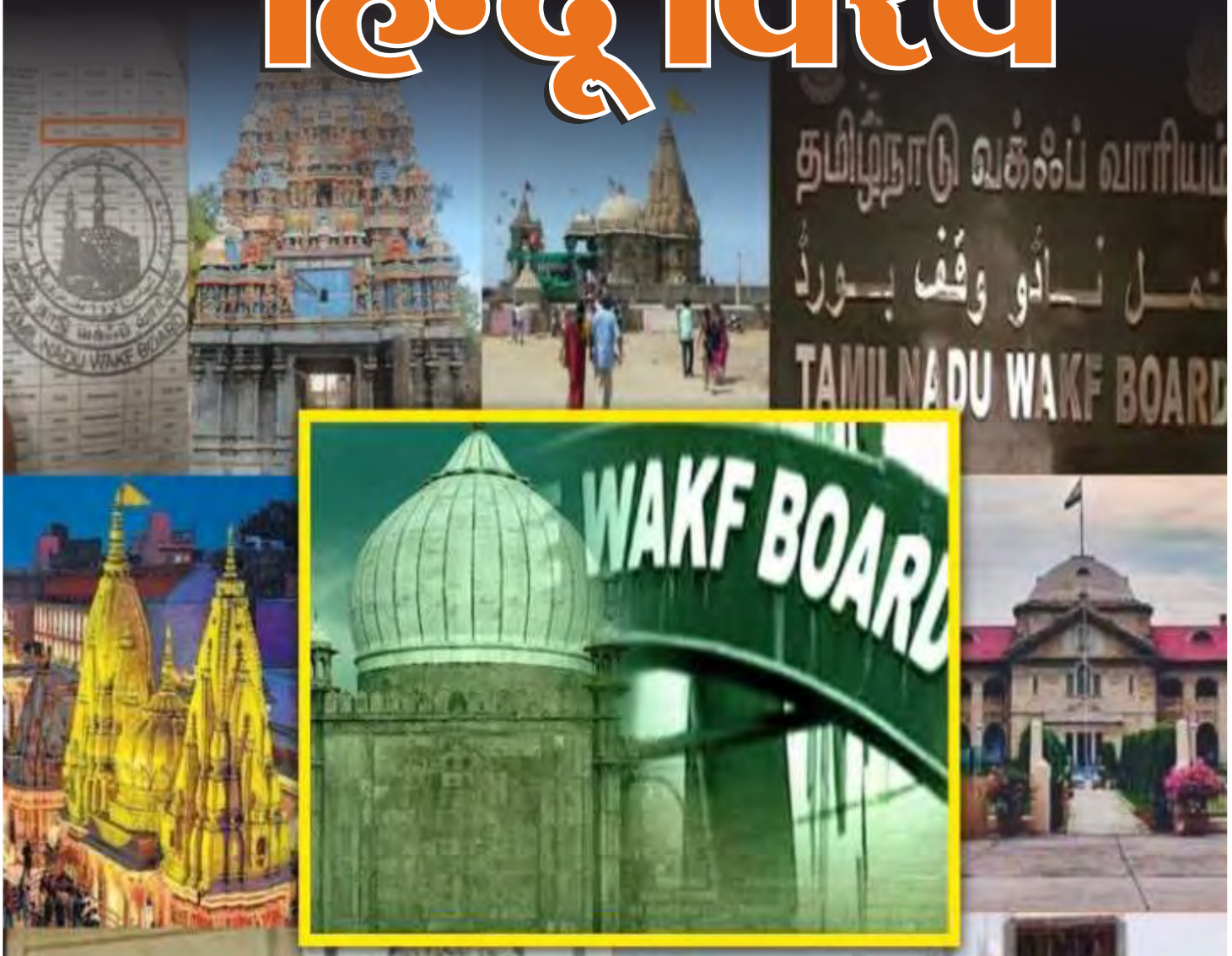

देश की भूमि पर अवैध अतिक्रमण का

हथकंडा है वक्फ बोर्ड

हनुमान जन्मोत्सव पर राजधानी दिल्ली के विभिन्न स्थानों में हनुमान चालीसा, सुंदरकांड, प्रभात फेरियाँ, शोभायात्राओं का आयोजन हुआ।

विहिप नंगल के प्रखंड अध्यक्ष की गोली मारकर हत्या। विहिप बंठिडा जिला द्वारा विरोध प्रदर्शन

श्री हनुमान जन्मोत्सव के अवसर पर विहिप केन्द्रीय कार्यालय में एकात्मता संकीर्तन मण्डल द्वारा भजन–संध्या का भव्य आयोजन। कार्यक्रम को विहिप संयुक्त महामंत्री श्री कोटेश्वर जी शर्मा ने संबोधित किया।

हिन्दू विश्व
राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

हे वरुणदेव! आपके सहयोग से हम रणभूमि में दुष्ट शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते हैं। युद्ध की इच्छा से प्रेरित होकर अनेक शत्रुओं से हम भेंट करते हैं। आपके वज्रादि आयुधों को हम स्तोत्रों द्धारा प्रोत्साहित करते हैं। स्तुति मंत्रों से हम आपकी तेजस्विता को और भी तीक्ष्ण करते हैं।

– ऋग्वेद

01–15 मई, 2024
वैशाख कृष्ण- शुक्ल पक्ष
नल संवत्सर
वि. सं. – 2080, युगाब्द- 5125

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. – 7217685539

परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा,
धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार,
रवि पराशर

व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. – 09582555152

सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग – 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली–110022–05
दूरभाष : 09582555152

011–26178992, 011–26103495
hinduvishwa@gmail.com

– : मूल्य :–

विदेशों के लिए	$ 75 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित	
एक प्रति	15/–
वार्षिक	300/–
त्रिवर्षीय	750/–
पंचवर्षीय	1,200/–
दसवर्षीय	2,250/–
पन्द्रह वर्षीय	3,100/–

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

@eHinduVishwa
@eHinduVishwa
@eHinduVishwa
कुल पेज – 28

जमीन पर अंधाधुंध मजहबी कब्जा करने का कांग्रेसी षड्यंत्र है वक्फ बोर्ड

रामभक्त हुए भाव विह्वल, मोदी को करेंगे अपने मत से तिलक	08
पूरी दुनियाँ में तेजी से फैल रहा है सनातन हिंदू धर्म	10
समस्त प्रवृत्तियों का प्रेरक व अधिष्ठाता परमात्मा	12
हिन्दू धर्म? साम्यवाद और काँग्रेस पर डॉ. अंबेडकर के विचार	14
अस्सी प्रतिशत लोगों की अनदेखी कर कैसे जीतेगा इंडी एलायंस	16
दु:खालयम् अशाश्वतम्	18
गंगाजल : शुद्धि का पवित्र प्रवाह	20
उच्च और निम्न रक्तचाप के लिए घरेलु नुस्खे	22
पाकिस्तान में फिर अल्पसंख्यकों पर अत्याचार	23
विहिप नंगल के प्रखंड अध्यक्ष की गोली मारकर हत्या विहिप बठिंडा जिला द्वारा विरोध प्रदर्शन	24
अशोक नगर में धर्मरक्षा निधि समर्पण	25
सवा लाख लोगों को भोजन कराके विहिप की राम रसोई का समापन	26

सुभाषित

निर्धनश्चापि कामार्थी दुर्बल:कलहप्रिय:।
मन्दशास्त्रो विवादार्थी त्रिविधं मूर्ख लक्षणम्।।

निर्धन होकर ऊँची–ऊँची कामना रखने वाला, दुर्बल होकर भी कलह करने वाला, शास्त्र ज्ञान से रहित हो बढ़–चढ़ कर विवाद करने वाला अर्थात् बहुबाती हो, ये तीनों जिसमें हो, समझिए वही महामूर्ख है।

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

देश की भूमि पर अवैध अतिक्रमण का हथकंडा है वक्फ बोर्ड

भारत पर इस्लामिक आक्रमण का दौर जब शुरु हुआ, तभी से सोना–चाँदी, हीरे–जवाहरात की लूट के साथ–साथ जमीन की भी लूट और अतिक्रमण आरम्भ हुआ। लुटेरे अतिक्रमण की गई भूमि को अपने गुलामों को सौंप जाते थे। कुछ व्यापारी आए, व्यापार के कारण बसे, स्थानीय राजाओं से इबादत की जगह मांगी, धीरे–धीरे आसपास के स्थानों पर कब्जा शुरु किया। कभी गरीबी को ढाल बनाया गया, कभी मजहबी आजादी को, कभी कब्र और मजार की आड़ में भूमि कब्जा की गई, शिक्षा के नाम पर मदरसों के लिए भूमि ली गई, यहाँ तक कि कर्बला के नाम पर भी कब्जा हुआ। अँग्रेज जाते–जाते इनको अकूत सम्पत्ति दे गए। काँग्रेस जब–जब केन्द्र या राज्यों में सत्ता में आई, इस्लामी तुष्टीकरण के नाम पर भूमि की अंधाधुंध बंदरबांट हुई। इन सब प्रकार के प्रयत्नों से भी भूमि अधिग्रहण की गति उनके अनुसार धीमी थी। भारत को इस्लामिक स्टेट बनाने का सपना देखने वालों ने, देश की पूरी भूमि को ही कब्जे में ले लेने का षड्यंत्र रचा हुआ है। हिन्दू जनसँख्या की बहुलता होते हुए यह कर पाना सम्भव नहीं था। कानूनी व्यवस्था भी इसमें बाधा है। तो कानून के सहारे ही भूमि कब्जा करने का षड्यंत्र रचा गया। वक्फ बोर्ड बनाया गया, इसे सरकारी विभाग बना दिया गया। इस्लामिक आक्रमण काल से लेकर आजतक इस वक्फ बोर्ड की ताकत और स्वरूप को लगातार बदला गया, इसकी शक्तियाँ लगातार बढ़ती रहीं। स्वतंत्रता के पश्चात इसे कानूनी अस्तित्व दिया नेहरू जी ने और धीरे–धीरे इसकी ताकत बढ़ाई गई। जाते–जाते मनमोहन सरकार ने वक्फ बोर्ड को अकूत कानूनी शक्ति दे दी।

आज यह वक्फ बोर्ड कहीं भी किसी की भी सम्पत्ति को कब्जे में ले सकता है, इसके कारण भूमि पर कब्जे का खेल लगातार जारी है। एटा अवागढ़ राजघराने की 99 करोड़ की सम्पत्ति पर वक्फ बोर्ड ने कब्जा कर लिया था, जिसपर उत्तरप्रदेश उच्च न्यायालय के आदेश से कब्जा छुड़ाया गपा। बेलगावी (कर्नाटक) की एक मस्जिद को अभी वक्फ बोर्ड के कब्जे से कोर्ट नें मुक्त कराया। वेल्लोर (तमिलनाडू) के वेप्पोर गाँव में 57 एकड़ भूमि वक्फ बोर्ड ने हथिया लिया। जालंधर के वार्ड 68 में वक्फ ने जमीन खाली करने का नोटिस दिया है। बोड्डुपल और घाटकेसर (तेलंगाना) के तीन हजार से अधिक भूखंड मालिकों ने शिकायत की है कि उनकी सम्पत्ति पर वक्फ बोर्ड दावा कर रहा है। मोहम्डन एजुकेशन सोसाइटी (कोल्हापुर) की 3500 करोड़ रुपए की सम्पत्ति पर वक्फ बोर्ड नें कब्जा कर लिया है। उत्तर रेलवे प्रशासन की ओर से दिल्ली की दो बड़ी मस्जिदों, बंगाली मार्केट और आईटीओ स्थित तकिया बब्बर शाह को नोटिस दिया गया कि पन्द्रह दिनों के अन्दर स्वेच्छा से अतिक्रमण हटा लें। मुगलसिरा बिल्डिंग, सूरत नगर निगम के मुख्यालय पर वक्फ बोर्ड ने दावा किया है। केन्द्रीय आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय ने 123 सम्पत्तियों के बाहर नोटिस चिपका दिया कि यह सम्पत्ति अब वक्फ बोर्ड की नहीं है। ज्ञानवापी मस्जिद परिसर पर सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड ने दावा कर दिया था।

ये कुछ उदाहरण मात्र हैं, लेकिन वक्फ बोर्ड के भूमि कब्जे के अनेक उदाहरण हैं, हजारों में ऐसी घटनाएँ हैं। जब देश में पंथनिरपेक्ष कानून है, फिर वक्फ बोर्ड जैसे मजहबी कानूनी व्यवस्था वाले संस्थानों का अस्तित्व ही गैर कानूनी है। यह संविधान की मूल भावना के विरुद्ध है। 370 और 35 ए की भांति इस वक्फ बोर्ड को भी मिटा देना चाहिए। ऐसे बोर्ड की देश में कोई आवश्यकता नहीं है, जो सरकारी और गैर सरकारी भूमि के कब्जे में ही दिनरात लगा हुआ हो।

इस्लामिक आक्रमण काल से लेकर आजतक इस वक्फ बोर्ड की ताकत और स्वरूप को लगातार बदला गया, इसकी शक्तियाँ लगातार बढ़ती रहीं। स्वतंत्रता के पश्चात इसे कानूनी अस्तित्व दिया नेहरू जी ने और धीरे–धीरे इसकी ताकत बढ़ाई गई। जाते–जाते मनमोहन सरकार ने वक्फ बोर्ड को अकूत कानूनी शक्ति दे दी।

जमीन पर अंधाधुंध मजहबी कब्जा करने का कांग्रेसी षड्यंत्र है वक्फ बोर्ड

मुरारी शरण शुक्ल
(सह सम्पादक हिन्दू विश्व)

बीजेपी सांसद हरनाथ सिंह ने हाल ही में वक्फ बोर्ड अधिनियम 1995 को खत्म करने के लिए एक निजी विधेयक लोकसभा में पेश किया है। हरनाथ सिंह का कहना है कि इस अधिनियम में असमानता फैली हुई है। साथ ही, उन्होंने कहा है कि इसकी आड़ में बड़े स्तर पर धर्मांतरण का खेल चल रहा है।

वक्फ बोर्ड विवादों में क्यों?

हरनाथ सिंह यादव बताते हैं कि इस वक्फ बोर्ड की ताकत ये है कि इस बोर्ड के मेंबर, सर्वेयर या कार्याधिकारी किसी भी संपत्ति को बोल देंगे कि ये संपत्ति उनकी है, तो बोर्ड को ये साबित करने की जरूरत नहीं है कि उसकी वो संपत्ति है या नहीं, बल्कि जिस व्यक्ति की वो सम्पत्ति है, वह सिद्ध करे कि ये संपत्ति उसकी है। उन्होंने आगे कहा कि यह सब होगा उस आदमी के आदेश पर, जिस सर्वेयर या कार्याधिकारी ने ये आदेश दिया है। इस एक्ट में ये भी प्रावधान है कि वक्फ बोर्ड के इस फैसले को किसी भी अदालत में चुनौती नहीं दी जा सकती, चाहे उच्च न्यायालय हो या उच्चतम न्यायालय।

वक्फ फंड में हेराफेरी

2022 सितंबर में आप विधायक और दिल्ली वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष अमानतुल्ला खान को भी वक्फ फंड की हेराफेरी और बोर्ड में अनियमितता के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। वहीं इस साल फरवरी में केंद्र सरकार द्वारा वक्फ बोर्ड की 123 संपत्तियों को भी जब्त किया गया था। ज्ञात हो कि दिल्ली की 123 प्रमुख सम्पत्ति यूपीए सरकार ने जाते–जाते वक्फ बोर्ड को दे दी थी। अब मोदी सरकार इसकी छानबीन करवा रही है। क्योंकि जमीन वक्फ के नाम हुई नहीं कि उसकी हेराफेरी शुरू हो जाती है।

123 सम्पत्ति वक्फ से वापस लेने का निर्णय

केंद्रीय आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय ने दिल्ली वक्फ बोर्ड की 123 संपत्तियों को अपने कब्जे में लेने का निर्णय किया है। इन वक्फ सम्पत्तियों में मस्जिद, दरगाह और कब्रिस्तान शामिल हैं। बोर्ड के अध्यक्ष और आम आदमी पार्टी (आप) के विधायक अमानतुल्ला खान ने केंद्र के इस कदम पर तीखी प्रतिक्रिया दी है। खान ने जोर दिया कि वह केंद्र सरकार को वक्फ संपत्ति का अधिग्रहण नहीं करने देंगे। उप भूमि और विकास अधिकारी (Deputy L&DO) ने 8 फरवरी को बोर्ड को भेजे एक पत्र में उसे 123 वक्फ संपत्तियों से संबंधित सभी मामलों से मुक्त करने के फैसले की जानकारी दी।

समिति की सलाह पर केंद्र ने उठाया कदम

मंत्रालय के भूमि एवं विकास कार्यालय (एलएंडडीओ) ने कहा कि जस्टिस (रिटायर्ड) एसपी गर्ग की अध्यक्षता वाली दो सदस्यीय समिति ने अपनी रिपोर्ट में गैर–अधिसूचित वक्फ संपत्तियों (Non Notified Waqf Properties) के मुद्दे पर कहा कि उसे दिल्ली वक्फ बोर्ड से कोई प्रतिनिधित्व या आपत्ति प्राप्त नहीं हुई है। एलएंडडीओ के पत्र के अनुसार, दिल्ली हाई कोर्ट के आदेश पर केंद्र सरकार ने समिति का गठन किया था।

ऐसे अनेक मामले

हरनाथ सिंह भी ये दावा करते हैं कि उनके पास ऐसे कई केस आए हैं, जिसमें वक्फ ने लोगों की संपत्तियों पर कब्जा कर लिया है। दो घटनाओं की चर्चा करते हुए वो बताते हैं कि तमिलनाडु प्रदेश के त्रिचि जिले के एक गाँव में डेढ़ हजार आबादी है, उसमें मात्र 7–8 घर मुस्लिमों के हैं और पड़ोस में ही एक शंकर जी का मंदिर है, जो डेढ़ हजार साल पुराना है। उन्होंने आगे कहा कि वक्फ बोर्ड ने उस गाँव की पूरी संपत्ति पर अपना दावा ठोक दिया है और सबको सम्पत्ति खाली करने का नोटिस कलेक्टर के यहाँ से आ गया है। कागजात से भी संपत्ति खारिज हो गई

है। इसमें गाँव की अधिकतर आबादी गरीब है। बाद में जब लोग थक हार गए, तो उन्हें एक विकल्प देते हुए मुस्लिम धर्म स्वीकार करने का सुझाव दिया गया कि अगर वो ऐसा कर लेंगे, तब उनकी जमीन बच जायेगी। दूसरा उदाहरण देते हुए हरनाथ बताते हैं कि ऐसी ही एक घटना महाराष्ट्र के सोलापुर जिले का है, जहाँ एक बस्ती में 250 अनुसूचित वर्ग के लोग हैं। उनके पास एक नोटिस उनकी जमीन को खाली करने का आया कि वो जहाँ रह रहे हैं, वह भूमि वक्फ बोर्ड की है। वो दर–दर भटके, तो उनको भी इस्लाम धर्म अपनाने का प्रस्ताव किया गया। उन्होंने कहा कि यह विषय जमीन हड़पने के साथ–साथ बड़े स्तर पर धर्मांतरण का भी है।

जमीन पर कब्जा का खेल

क्या 1995 में पारित हुए अधिनियम के अनुसार वक्फ बोर्ड किसी भी संपत्ति पर कब्जा कर सकता है? क्या कहता है कानून? इन दिनों वक्फ बोर्ड कानून खासा चर्चाओं में है। देश के तीसरे सबसे बड़े जमींदार पर आरोप लग रहे हैं कि इस कानून के चलते वक्फ बोर्ड देश के लोगों की संपत्ति पर अवैध रूप से कब्जा कर रहा है।

साढ़े आठ लाख सम्पत्ति पर कब्जा

भारत में सशस्त्र बल और रेलवे के बाद वक्फ बोर्ड तीसरा सबसे बड़ा जमींदार है। वक्फ मैनेजमेंट सिस्टम ऑफ इंडिया के डेटा के अनुसार देश में वक्फ बोर्ड के पास फिलहाल 8 लाख 54 हजार 509 संपत्तियाँ हैं, जो कुल मिलाकर 8 लाख एकड़ से ज्यादा है।

गड़बडियों का बोर्ड

देशभर में वक्फ बोर्ड के घपले लगभग एक जैसे हैं। बिल्डरों या बिजनेसमैन वक्फ की जमीन की पहचान कर बोर्ड के सदस्यों से संपर्क करते हैं। औने–पौने दाम पर जमीन बेच दी जाती है और सदस्यों को उनका हिस्सा मिल जाता है। जिन राज्यों में वक्फ की जमीन आसानी से नहीं बिक पाती है, वहाँ बहुत आसान लीज पर इन्हें बिल्डरों या कारोबारियों को सौंप दिया जाता है। यहाँ भी बोर्ड के सदस्यों को उनका हिस्सा मिल जाता है, क्योंकि वे लीज के नियम कुछ इस तरह बना देते हैं, ताकि प्रॉपर्टी का आसानी से वाणिज्यिक उपयोग हो सके। देश में कई इमारतें, होटल, मॉल और फैक्टरियाँ वक्फ की जमीनों पर खड़ी हैं। या तो बहुत कम कीमत पर ये जमीनें बेच दी गईं, या फिर बहुत कम किराए पर उपलब्ध करा दी गईं। उम्मीद तो यह की जाती है कि वक्फ मुस्लिम समुदाय के कल्याण के लिए पैसों का इंतजाम करेगा, लेकिन देशभर के वक्फ बोर्ड में अनियमितता और भ्रष्टाचार की भरमार रही है। इस संस्था में जवाबदेही न के बराबर है।

आइए समझते हैं वक्फ और उसके घपलों को

वक्फ एक अरबी शब्द है, जिसका मतलब होता है वह प्रॉपर्टी जो अल्लाह के नाम पर दान की गई है। ताकि उसका इस्तेमाल गरीबों की भलाई के लिए हो सके। भारत में वक्फ संस्थाओं का वजूद 800 साल से है। वक्फ बोर्ड की स्थापना इस्लामिक काल की मानी जाती है। शुरुआत हुई, मुस्लिम बादशाहों द्वारा दान की गई जमीनों की देखभाल करने से। 1954 में जवाहरलाल नेहरू सरकार ने वक्फ अधिनियम पारित किया था, जिसके बाद वक्फ का केंद्रीकरण हुआ। अधिनियम के अंतर्गत, सरकार ने 1964 में एक केंद्रीय वक्फ परिषद की स्थापना की थी। ये कानून तब से ही चर्चाओं में है। हालांकि इस अधिनियम को मंजूरी 1955 में ही मिल गई थी।

वर्ष 1995 में बनाया गया था यह कानून

एक सेकुलर देश में एक मजहबी एक्ट (Waqf Act 1995) लागू है। ये अपने आप में हैरानी की बात है। क्यों हिंदुओं, ईसाईयों और सिखों के लिए ऐसा कोई एक्ट नहीं है? केवल मुस्लिमों को लिए ही क्यों है? विडंबना देखिये कि वर्ष 1991 में Places of Worship Act बना, जो कहता है कि देश की स्वतंत्रता के समय जो धार्मिक स्थल जिस स्वरूप में थे, उसे वैसे ही बरकरार रखा जाएगा। वहीं 1995 में वक्फ एक्ट लागू होता है, जो देशभर में वक्फ बोर्ड को ये अधिकार देता है कि वो किसी भी संपत्ति पर अपना हक जता सकता है और इसके खिलाफ पीड़ित पक्ष देश की किसी अदालत में गुहार तक नहीं लगा सकता।

मनमोहन सरकार का षड्यंत्र

2013 में सोनिया–मनमोहन सरकार ने वक्फ बोर्ड को अपार शक्तियाँ दे दी हैं। सोनियाँ–मनमोहन सरकार ने वक्फ कानून–1995 में संशोधन कर, उसे इतना घातक बना दिया है कि वह किसी भी संपत्ति पर दावा करने लगा है। वक्फ कानून–1995 के अनुसार वक्फ बोर्ड किसी भी संपत्ति को वक्फ संपत्ति घोषित कर सकता है।

किसी भी मुस्लिम देश में नहीं है ऐसा विधान

ये सुनने में ही अजीब लगता है कि एक धर्मनिरपेक्ष देश में ऐसा एक्ट है। जबकि किसी मुस्लिम देश में ऐसा कोई एक्ट नहीं है। तुर्की, लीबिया, इजिप्ट, सुडान, लेबनान, सीरिया, जोर्डन और इराक जैसे मुस्लिम देशों में ना तो कोई वक्फ बोर्ड है और ना ही कोई वक्फ कानून। हमारा मानना है कि भारत में भी वक्फ

एक्ट की कोई जगह नहीं होनी चाहिए। सरकार को वक्फ एक्ट को रद्द कर देना चाहिए और सभी धर्मों के लिए एक जैसा एक्ट बनाया जाना चाहिए।

क्या है वक्फ बोर्ड कानून?

वक्फ इस्लामिक कानून में एक प्रकार का इस्लामिक धर्मार्थ बंदोबस्त है। जहाँ एक संपत्ति का स्वामी अल्लाह को बना दिया जाता है और संपत्ति को स्थायी रूप से धार्मिक कार्यों के लिए समर्पित किया जाता है। आसान भाषा में समझें तो जब कोई मुस्लिम अपनी संपत्ति दान कर देता है, तो उसकी देखरेख का जिम्मा वक्फ बोर्ड के पास ही होता है। वक्फ बोर्ड के पास दान दी गई किसी संपत्ति पर कब्जा करने या वो संपत्ति किसी और को देने का अधिकार होता है। इस बोर्ड का काम देखने वालों को मुतवल्ली कहा जाता है। इसके अलावा वक्फ बोर्ड उन संपत्तियों की रक्षा करता है और ये निश्चित करता है कि उसके पास जो संपत्तियाँ हैं, उनसे जो आय हो रही है, उनका क्या इस्तेमाल किया जा रहा है, या उसका क्या उपयोग किया जाना है। इस संपत्ति से गरीब और जरूरतमंदों की मदद करना, मस्जिद या अन्य धार्मिक संस्थान को बनाए रखना, शिक्षा की व्यवस्था करना और अन्य धर्म के कार्यों के लिए पैसे देने संबंधी चीजें शामिल हैं। वहीं किसी संपत्ति को लंबे समय से धर्म के कार्य के लिए इस्तेमाल में लिया जा रहा हो, तो वो भी वक्फ बोर्ड के पास जाती है। इसमें यह नियम भी शामिल है कि यदि किसी संपत्ति को एक बार वक्फ बोर्ड को दे दिया जाता है, तो उसे फिर वापस नहीं लिया जा सकता।

किसी भी जमीन पर हो सकता है वक्फ बोर्ड का कब्जा?

अब सवाल ये उठता है कि क्या किसी भी जमीन पर वक्फ बोर्ड अपना कब्जा घोषित कर सकता है? तो बता दें कि ऐसा नहीं है। वक्फ एक्ट 1995 की धारा 40 के अनुसार, यदि वक्फ के सामने ऐसा कोई कारण होता है कि संबंधित संपत्ति पर उनका हक है, तो बोर्ड द्वारा उस संपत्ति पर कब्जा जमाने वाले को नोटिस भेज दिया जाता है। वहीं एक्ट की धारा 3 के अनुसार, उसी संपत्ति को वक्फ की संपत्ति घोषित किया जा सकता है, जो मुस्लिम लॉ की ओर से मान्यता प्राप्त किसी धार्मिक या चौरिटेबल कार्य के लिए दान दी जाती है।

नेताओं से गठजोड़

देश में फिलहाल 30 वक्फ बोर्ड हैं। किसी भी वक्फ बोर्ड में कम से कम 5 सदस्य होने चाहिए। इन सभी सदस्यों को राज्य सरकारें नॉमिनेट करती हैं। यानी वे ही इस बोर्ड में शामिल होते हैं, जिन्हें उस राज्य की सरकार चाहती है। इन बोर्ड में वही नेता सदस्य बन पाते हैं, जिन्हें सरकार में जगह नहीं मिल पाई होती है। ऐसे में गरीब मुस्लिम समुदाय के लिए कुछ खास करने की जगह इनकी नजर हमेशा भूमाफिया या अतिक्रमण करने वालों से सांठगांठ करने पर रहती है। 1995 वक्फ एक्ट के अनुसार सभी बोर्ड का नियमित ऑडिट सर्वे होना चाहिए, लेकिन कई सरकारों ने जानबूझकर ऐसा नहीं कराया।

इस्लाम खतरे में है...

जब भी कभी वक्फ बोर्ड में व्याप्त भ्रष्टाचार की जांच को लेकर बात आती है, तो बोर्ड सदस्य अकसर ये जुमला दुहरा देते हैं– 'इस्लाम खतरे में है'। ऐसा कहकर वे खुद को बचा रहे होते हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वे द्वारा जिन मकबरों और मजारों की देखरेख की जा रही है, उन्हें लेकर वक्फ अपना दावा कर रहा है, लेकिन इन धार्मिक दावों के पीछे लड़ाई पैसों की ही है।

अतिक्रमण को बढ़ावा...

बोर्ड खुद ही कई स्मारकों का अतिक्रमण करवाता है। पहले मुस्लिमों से कहा जाता है कि वे नमाज पढ़ें। फिर इसे इबादत की जगह घोषित कराकर आसपास बस्तियाँ बनवा दी जाती हैं। इन अवैध बस्तियों के पास की जमीन को बेचना या लीज पर देना आसान हो जाता है। इन सब गड़बड़ियों का ही नतीजा है कि आज देश में वक्फ की 70 प्रतिशत सम्पत्ति अतिक्रमण का शिकार है। यह सब या तो वक्फ बोर्ड मेंबरों की मेहरबानी से है या फिर सरकारी महकमों की अनदेखी से।

किसी की भी संपत्ति छीन सकता है वक्फ बोर्ड

वक्फ एक्ट (Waqf Act 1995) का सेक्शन 3 बताता है कि अगर वक्फ सोचता है कि जमीन किसी मुस्लिम से संबंधित है, तो वह वक्फ की संपत्ति है। यहाँ ध्यान दीजियेगा कि वक्फ का सिर्फ सोचना ही काफी है, उसे इसके लिए किसी सबूत की जरूरत नहीं है। अगर वक्फ ने ये मान लिया कि आपकी संपत्ति, आपकी नहीं, बल्कि वक्फ बोर्ड की है, तो फिर आप अदालत भी नहीं जा सकते। आप वक्फ की ट्रिब्यूनल कोर्ट में जा सकते हैं। वक्फ एक्ट का सेक्शन 85 कहता है कि अगर वक्फ बोर्ड ट्रिब्यूनल को आप संतुष्ट नहीं कर पाते कि ये आपकी ही जमीन है, तो आपको जमीन खाली करने का आदेश दे दिया जाएगा। ट्रिब्यूनल का फैसला ही अंतिम होगा। कोई सिविल कोर्ट, वक्फ ट्रिब्यूनल कोर्ट के फैसले को बदल नहीं सकती है। वक्फ एक्ट का सेक्शन 40 कहता है कि जब वक्फ बोर्ड किसी शख्स की जमीन पर दावा करता है, तो जमीन पर दावा सिद्ध करने की जिम्मेदारी वक्फ बोर्ड की नहीं होती है, बल्कि जमीन के असली मालिक को अपनी जमीन पर मालिकाना हक साबित करना होता है। यानी अगर वक्फ बोर्ड किसी जमीन पर दावा कर दे, तो समझो वो जमीन उसकी हो गई। तमिलनाडु में भी यही हुआ है। दिल्ली हाई कोर्ट में इसी साल अप्रैल में एक याचिका दायर की गई है, जिसमें वक्फ एक्ट के प्रावधानों को चुनौती दी गई है।

रामभक्त हुए भाव विह्वल, मोदी को करेंगे अपने मत से तिलक !!

मृत्युंजय दीक्षित

वर्ष 2024 में 500 वर्षों के पश्चात प्रभु राम के जन्मदिवस का उत्सव उनकी जन्मस्थली पर मनाया गया। इस अवसर पर सूर्यवंशी रामलला के भाल पर स्वयं सूर्यदेव ने अपनी किरणों से तिलक किया, ये अद्भुत–अलौकिक क्षण हिन्दुओं के निरंतर संघर्ष और बलिदान के प्रसाद का क्षण था, जिसे देखकर संपूर्ण विश्व का हिंदू जन–मानस भाव विभोर हुआ। सूर्य तिलक का ये क्षण हमारी सँस्कृति के पुनर्जागरण का प्रतीक क्षण है। अयोध्या के दिव्य, भव्य व नव्य राम मंदिर में प्रभु श्रीराम का सूर्य तिलक संपूर्ण सनातन हिंदू समाज के लिए कल्याणकारी होने जा रहा है।

रामनवमी का पर्व अत्यंत भव्यता और उल्लास के साथ मनाया गया। सूर्य तिलक के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने असम के नलबाड़ी में अपनी चुनावी जनसभा के बाद हेलीकाप्टर में ही अपने टैब पर सूर्य तिलक का सीधा प्रसारण देखा। श्रद्धा भाव में तल्लीन प्रधानमंत्री ने टैब पर प्रभु राम का दर्शन करते समय भी अपने जूते उतार कर रख दिए थे, इस बात पर सभी का ध्यान गया। इस अवसर पर उन्होंने अपने एक्स (ट्विटर) हैंडल पर पोस्ट किया कि "मुझे अयोध्या में रामलला के सूर्य तिलक के अद्भुत और अप्रतिम क्षण को देखने का सौभाग्य मिला। श्रीराम जन्मभूमि का ये बहुप्रतीक्षित क्षण हर किसी के लिए परमानंद का क्षण है। ये सूर्य तिलक विकसित भारत के हर संकल्प को अपनी दिव्य ऊर्जा से इसी तरह प्रकाशित करेगा।

इसके पूर्व प्रधानमंत्री मोदी ने नलबाड़ी की जनसभा में जय श्रीराम, जय सियाराम और राम लक्ष्मण जानकी –जय बोलो हनुमान की, का उद्घोष करवा कर राम लहर को पुनः जीवंत कर दिया। सूर्य की किरणों से जब प्रभु श्रीराम का महामस्तकाभिषेक हो रहा था, उस समय अयोध्या ही नहीं, अपितु संपूर्ण भारत का हिंदू समाज उल्लास में डूबा हुआ था। दूर–दूर से आ रहे लाखों श्रद्धालु जिनमें धनी–निर्धन, स्त्री–पुरुष, आबाल वृद्ध व समाज के सभी वर्गो के लोग थे, अत्यंत धैर्य, संयम व अनुशासन के साथ अपने प्रभु श्रीराम का दर्शन करने के लिए आतुर थे। लाखों की भीड़ आने के बावजूद किसी भी प्रकार की कोई अव्यवस्था नहीं हुई। ऐसा लग रहा था कि प्रभु राम के भक्त भी प्रभु श्रीराम की तरह मर्यादित हैं।

भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण की इस महान घटना के दिन को भी, मुस्लिम तुष्टिकरण की विकृत राजनीति से गले तक भरे हुए राजनैतिक दलों ने अपनी सियासत चमकाने व प्रभु श्रीराम सहित संपूर्ण हिंदू सनातन समाज की आस्था का उपहास करने का अवसर बना लिया। अयोध्या में कारसेवकों का नरसंहार करने वाली समाजवादी पार्टी के नेता महासचिव रामगोपाल यादव ने कहा कि, "रामनवमी को कुछ लोगों ने पेटेंट करा लिया है। ये उनकी बपौती नहीं है। देश में एक नहीं हजारों राम मंदिर हैं। वे यहीं पर नहीं रुके उन्होंने पूजा–पाठ आदि को पाखंड भी कहते हुए पूजा–पाठ करने वाले हिन्दुओं को पाखंडी बता दिया। रामगोपाल यादव ने कहा कि अयोध्या में सब अशुभ हो रहा है, आधे–अधूरे मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा हुई, अब बीजेपी के नेता ढोल पीट रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि वह कभी मंदिर नहीं गये, मंदिर में पाखंडी जाते हैं। उधर शिवसेना उद्धव ठाकरे गुट के नेता

संजय राउत व राजद नेता मनोज झा सहित सभी मुस्लिम परस्त नेता अपने घरों से निकल आए और हिंदू समाज व राष्ट्रनायकों को उपदेश देने लगे। स्पष्ट है कि घमंडिया इंडी गठबंधन के लोगों को राम मंदिर से परेशानी हो रही है। श्रीराम मंदिर पर सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक फैसला आने के बाद से ही घमंडिया गठबंधन किसी न किसी प्रकार से हिंदू सनातन समाज व आस्था के केन्द्रों का अपमान करता आ रहा है।

समाजवादी नेता अखिलेश यादव और राहुल गाँधी रामनवमी के दिन गाजियाबाद में प्रेस वार्ता कर रहे थे और उन्होंने केवल एक पंक्ति में रामनवमी की शुभकामना दी और भाजपा की निंदा में लग गये। गाजियाबाद में रहते हुए भी उन्होंने नहीं बताया कि वह अयोध्या में राम मंदिर का दर्शन करने कब जाएंगे। अयोध्या में आ रही लाखों श्रद्धालुओं की भीड़ राहुल गाँधी के उन सभी सवालों का जवाब दे रही है, जो वह अपनी न्याय यात्रा में जनता से पूछते रहते थे। राहुल गाँधी अपनी न्याय यात्रा में आरोप लगाते रहे कि अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा समारोह में बड़े–बड़े उद्योगपति व स्टार ही दिखलाई पड़े, वहाँ पर न तो कोई गरीब था न ही किसान, किंतु आज उन्हें हर प्रश्न का उत्तर मिल रहा है। अयोध्या में जो लाखों श्रद्धालु भगवान राम का दर्शन करने आ रहे हैं उनमें गरीब, किसान, मजदूर, बेरोजगार, महिलाएं, दलित, पिछड़े–अतिपिछड़े कौन नहीं हैं? यहाँ तक कि मुस्लिम समाज के लोग भी दर्शन करने लिए पहुँच रहे हैं। अयोध्या आ रही सभी ट्रेनें पूरी तरह से भरी हुई हैं।

कॉंग्रेस, सपा, बसपा, आम अदमी पार्टी, तृणमूल कॉंग्रेस, वामपंथी और दक्षिण के द्रमुक सभी दलों ने मंदिर निर्माण के समय तरह–तरह के आरोप लगाए। जब मंदिर निर्माण के लिए निधि समर्पण अभियान चलाया जा रहा था, तब भाजपा व संघ को चंदा जीवी कहा गया। जब घर–घर अक्षत अभियान चलाया गया, तब उस पर विकृत बयानबाजी की। कोर्ट में जाकर मंदिर निर्माण रोकने का प्रयास किया। आज यही सनातन विरोधी तत्व राम मंदिर बन जाने से आहत है, क्योंकि ये इस विवाद

की आड़ में मुस्लिम तुष्टीकरण की राजनीति को चमकाये रखना चाहते थे।

कॉंग्रेस ने सुप्रीम कोर्ट में प्रभु श्रीराम को काल्पनिक बताया, जय श्रीराम को साम्प्रदायिक नारा बताया, पहले राम मंदिर पर निर्णय टालने और फिर भूमि पूजन समारोह को रोकने का प्रयास किया, किन्तु आज यह इतने मजबूर हो गये हैं कि कहने लगे हैं कि प्रभु श्रीराम तो सबके हैं, किंतु उसमें भी उनके विचारों में विकृति उभर आती है।

रामनवमी के अवसर पर सबसे अधिक असहज बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी दिखाई पड़ीं। बंगाल सरकार ने दंगों का बहाना बनाकर हिन्दुओं को रामनवमी की शोभायात्रा निकालने की अनुमति नहीं दी, जिससे हिंदू संगठनों को अदालत की शरण में जाना पड़ा, जिसने उन्हें अनुमति दे दी। भड़की ममता ने रामनवमी के पवित्र अवसर पर अँग्रेजी में एक पंक्ति का एक्स (ट्वीट) पोस्ट किया और लिखा, "मेन्टेन पीस।" आजकल ममता बनर्जी के मुँह से केवल एक ही शब्द निकलता है दंगा, दंगा और दंगा। नितांत आपत्तिजनक भाषण देते हुए ममता ने कहा कि वे लोग (हिन्दू) आयेंगे, किंतु आप सभी (मुस्लिम) को बिल्कुल कूल–कूल रहना है। अपने भाषणों से ममता बनर्जी मुस्लिम तुष्टिकरण की पराकाष्ठा पार कर रही हैं। ममता बनर्जी की बोई नफरत का ही परिणाम था कि मुर्शिदाबाद जिले के शक्तिपुर में रामनवमी पर बम फेंके गये, जिसमें 20 लोग घायल हो गये। सनातन विरोधी दल एक झूठा नैरेटिव और भी चला रहे थे कि प्रधानमंत्री मोदी ने अयोध्या में अधूरे राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा करवा दी है, उसका उन्हे दंड मिलेगा, किंतु अब समय बदल चुका है, इन दलों ने जिस प्रकार अयोध्या में दिव्य मंदिर का उपहास उड़ाया, अब उसका सूद सहित बदला लेने का समय सनातन समाज के पास आ चुका है।

मतदान का समय आ गया है, समस्त हिंदू समाज को ठान लेना चाहिए कि अबकी बार उन्हीं को लाना है, जो प्रभु श्रीराम को लेकर आए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में संपूर्ण विश्व में सनातन का डंका बज रहा है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में साँस्कृतिक उत्थान की लहर चल रही है। अयोध्या में दिव्य राम मंदिर प्रगति पर है। वाराणसी में काशी विश्वनाथ धाम सहित समस्त वाराणसी का अभूतपूर्व विकास हो रहा है। मध्य प्रदेश के उज्जैन में महाकाल लोक का विकास हुआ है। सभी तीर्थस्थलों को रेलवे व हवाई सेवाओं के साथ लगातार जोड़ा जा रहा है। जहाँ कोई सपने में भी मंदिर बनवाने की बात नहीं सोच सकता था, ऐसे में अबूधाबी में मोदी जी एक हिंदू मंदिर का उद्घाटन करके आये हैं। अयोध्या में प्रभु श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा के पूर्व प्रधानमंत्री मोदी ने 11 दिनों का अनुष्ठान किया और रामायणकाल से जुड़े सभी मंदिरों की यात्रा की। सनातन सँस्कृति के गौरव को बढ़ाने वाले अनेक संकल्प भाजपा ने अपने संकल्प पत्र में रखे हैं। हिन्दू समाज को एकजुट होकर प्रभु राम का सूर्य तिलक संभव करने वाले मोदी जी को अपने मत का तिलक लगाना चाहिए, क्योंकि मोदी जी को लगाया गया हिन्दू मतों का तिलक सनातन सँस्कृति को सम्पूर्ण विश्व में पुनः सूर्य के समान स्थापित करेगा ।

ymritvsk1973@gmail.com

पूरी दुनियाँ में तेजी से फैल रहा है
सनातन हिंदू धर्म

प्रहलाद सबनानी

पूरे विश्व में आज विभिन्न देशों के नागरिकों में शांति का अभाव दिखाई दे रहा है एवं परिवार के सदस्यों के बीच भी भाईचारे की कमी दिखाई दे रही है। शादी के तुरंत बाद तलाक लेना तो जैसे आम बात हो गई है, आज कई विकसित देशों में तलाक की दर 60 प्रतिशत से भी अधिक है। बुजुर्ग माता–पिता की देखभाल करने वाला उनका अपना कोई साथ नहीं है। अमेरिका में तो लगभग 10 लाख बुजुर्ग नागरिक खुले में रहते हुए अपना जीवन यापन करने को मजबूर हैं। इन देशों में तो जैसे सामाजिक तानाबाना ही छिन्न–भिन्न हो गया है। इसी प्रकार के अन्य कई कारणों के चलते आज सनातन हिंदू धर्म के प्रति विदेशी लोग आकर्षित हो रहे हैं, क्योंकि सनातन हिंदू धर्म का अपना एक अलग ही महत्व है। सनातन हिंदू धर्म में कुटुंब के प्रति वफादारी बचपन से ही सिखाई जाती है। भारत में आज भी संयुक्त परिवार की प्रथा प्रचलन में हैं, जिससे बच्चे अपने बचपन में ही अपने माता पिता की सेवा करने के संस्कार सीखते हैं और उन्हें पूरे जीवन भर अपने साथ रखने का संकल्प लेते हैं।

विश्व में कुछ अन्य धर्मों में बच्चों को बचपन में ही कट्टरता सिखाई जाती है एवं केवल अपने धर्म को ही सर्वश्रेष्ठ धर्म के रूप में पेश किया जाता है। इससे इन बच्चों में अन्य धर्मों के प्रति सद्भावना विकसित नहीं हो पाती है। कई बार तो अन्य धर्म को मानने वाले नागरिकों का धर्म परिवर्तन कर उन्हें अपना धर्म मानने को मजबूर भी किया जाता है। इसके ठीक विपरीत सनातन हिंदू धर्म किसी अन्य मजहब को मानने वाले व्यक्ति पर कभी भी कोई दबाव नहीं डालता है। सनातन हिंदू संस्कृति अन्य धर्मों के नागरिकों को किसी प्रकार का धर्म मानने की खुली स्वतंत्रता प्रदान करती है। ऐसा कहा जाता है कि जब इस दुनियाँ में कोई भी धर्म नहीं था, तब इस धरा पर निवास करने वाले लोग केवल सनातन हिंदू धर्म का ही पालन करते थे। सनातन हिंदू धर्म बहुत ही

ज्यादा संयमित धर्म है, जो किसी अन्य धर्म की ना तो उपेक्षा करता है और न ही वह अपने धर्म के वर्चस्व को सबके सामने रखने का प्रयास करता है। इसी कारण से कट्टरता के इस माहौल में आज पूरे विश्व में सनातन हिंदू धर्म के प्रति लोगों की आस्था एवं रुचि बढ़ रही है।

सनातन हिंदू धर्म आज विश्व में तीसरा सबसे बड़ा धर्म है और भारत में अधिकतर लोग इस धर्म को मानते हैं। एक अनुमान के अनुसार सनातन हिंदू धर्म इस पृथ्वी पर 10,000 वर्षों से हैं। लेकिन यदि वेदों और उपनिषदों में लिखी बातों को मानें, तो सनातन हिंदू धर्म की उत्पति लाखों वर्ष पहले हुई थीं उस समय ये सनातन धर्म के नाम से जाना जाता था। हिंदू धर्म को मानने वाले लोग भारत में रहते थे। इस धर्म को बहुत प्रभावशाली माना गया है। अन्य कुछ धर्मों के संस्थापक रहे हैं, जैसे ईसाई धर्म के संस्थापक के रूप में प्रभु यीशू को माना जाता है तथा इस्लाम धर्म के लिए मोहम्मद साहिब को संस्थापक माना जाता है और बौद्ध धर्म के लिए गौतम बुद्ध को संस्थापक जाना जाता है। परंतु, हिंदू धर्म के बारे में कहा जाता है कि कुछ संतों एवं महापुरूषों ने एक होकर जीवन को सही तरीके से व्यतीत करने का तरीका विकसित किया था। सनातन हिंदू संस्कृति को, धर्म नहीं बल्कि यह, जीवन जीने का एक तरीका भी माना जाता था।

सनातन हिंदू धर्म का यह मानना है कि प्रभु परमात्मा ने इस धरा पर सबको खुलकर हंसने, उत्सव मनाने और मनोरंजन करने की योग्यता दी है। यही कारण है कि सनातन हिंदू धर्म में सबसे अधिक त्योहार और संस्कार होते हैं।

उत्सव, जीवन में सकारात्मक संदेश लेकर आते हैं और हमारे संस्कार मिलन सरिता को दर्शाते हैं। सनातन हिंदू धर्म की यही प्रक्रिया दुनिया पसंद करती है। तभी तो ब्रिज की होली और कुम्भ के मेले का अवलोकन करने के लिए पूरी दुनियाँ से लोग भारत में आते हैं। यही एक कारण है कि आज पूरी दुनियाँ के कोने–कोने में लोग हिंदू धर्म में अपनी रुचि दिखा रहे हैं।

हिंदू अमेरिकन फाउंडेशन के अनुसार, आबादी के लिहाज से दुनियाँ के तीसरे सबसे बड़े देश अमेरिका में अब हिंदूओं की जनसँख्या तेजी से बढ़ रही है और हिंदू वहाँ राजनीतिक रूप से भी सक्रिय हो रहे हैं। इसके अलावा, कोरोना महामारी के बाद से पूरे अमेरिका एवं विश्व के अन्य देशों में योग और ध्यान की ओर लोगों का आकर्षण बहुत बढ़ गया है। योग और ध्यान पूरे विश्व को सनातन हिंदू धर्म की ही देन है। सनातन हिंदू धर्म बिलकुल ही कट्टरपंथी धर्म नहीं है। अन्य धर्मों की तरह इसमें किसी भी प्रकार का सामाजिक दबाव नहीं हैं। इस धर्म में धार्मिक शिक्षा के लिए कोई भी जोर जबरदस्ती नहीं है, जैसा कि कुछ अन्य धर्मों में होता है। हिंदू धर्म मानता है कि शिक्षा सभी तरह की होनी चाहिए, केवल धार्मिक आधार पर शिक्षा देना उचित नहीं है। किसी भी बच्चे की शिक्षा में अगर संस्कार जुड़ जाए, तो वह बच्चा बड़ा होकर एक जिम्मेदार नागरिक बनता है और वह एक अच्छा इंसान बनता है। सनातन हिंदू धर्म में परोपकार की भावना होती है। अन्य धर्मों की तरह यह केवल अपने वर्चस्व के बारे में नहीं सोचता है।

इंडोनेशिया जो कि एक मुस्लिम बहुल देश है, वहाँ पर सनातन हिंदू धर्म से जुड़े संस्कार आज भी पाए जाते हैं, जिससे यह सिद्ध होता है कि यह देश हिंदू धर्म से कितना प्रभावित रहा है। मुस्लिम बहुल देश होने के बावजूद हिंदू धर्म का बहुत बड़ा प्रभाव, यहाँ आज भी दिखाई देता है। मुस्लिम लोग भी अपना नाम हिंदू देवी देवताओं के नाम पर रखना पसंद करते हैं। सनातन हिंदू धर्म कभी भी किसी नागरिक पर किसी भी प्रकार का दबाव नहीं डालता है। सनातन हिंदू धर्म कभी भी किसी को लालच देकर धर्म परिवर्तन नहीं करवाता है। परंतु, आज प्रत्येक वर्ष पूरे विश्व में बहुत से लोग अन्य धर्मों को छोड़कर स्वप्रेरणा से हिंदू धर्म अपना रहे हैं। सनातन हिंदू धर्म में स्त्रियों को जितना सम्मान दिया जाता है, उतना किसी भी अन्य धर्म में नहीं दिया जाता है। सनातन हिंदू धर्म में स्त्रियों की पूजा की जाती है। सनातन हिंदू धर्म में आस्था का मतलब है कि जीवन में उमंग, उत्साह, उल्लास और मानवता की ओर झुकाव। जहां भारत में सनातन हिंदू धर्म को मिटाने की नाकाम कोशिश की जाती है वहीं रूस, ब्रिटेन, अमेरिका, घाना, सुरीनाम जैसे देशों में हिंदू धर्म तेजी से फैल रहा है। सनातन हिंदू धर्म पूरी दुनियाँ को शांति का संदेश देता है।

कई देशों में तो आज सनातन हिंदू संस्कारों का अनुपालन करते हुए विशेष गाँव स्थापित किए जा रहे हैं। आयरलैंड में 22 एकड़ का एक हिंदू आइलैंड बन गया है। इसे हरे कृष्णा आइलैंड का नाम दिया गया है। यहाँ निवासरत समस्त नागरिकों द्वारा सनातन हिंदू धर्म के प्राचीन रीति–रिवाजों का पालन बहुत ही सहजता के साथ किया जाता है। सनातन हिंदू धर्म के वैदिक नियमों को सदा–सदा के लिए जीवित रखने के लिए यहाँ पर रहने वाले सनातनी हिंदू, मांस का परित्याग का शाकाहारी भोजन ग्रहण करते हैं। नशीले पदार्थों, शराब एवं सिगरेट आदि पदार्थों से भी दूर रहते हैं। सुबह एवं शाम मंदिरों में पूजा अर्चना करते हैं। उनका जीवन सादगी भरा रहता है तथा कृषि एवं गाय पालन करते हुए अपना जीवन यापन करते हैं। महिलाएँ साड़ी पहनती है एवं पुरुष धोती कुर्ता धारण करते हैं। इसी प्रकार के गाँव जहाँ हिंदू सनातन सँस्कृति का अनुपालन किया जाता है, अन्य कई देशों यथा घाना, फीजी एवं अन्य कई अफ्रीकी देशों, सुदूर अमेरिका, यूरोप के देशों, आदि में भी तेजी से फैलते जा रहे हैं।

इसी प्रकार, कजाकिस्तान एक मुस्लिम देश है, यहाँ की 65 प्रतिशत से अधिक आबादी इस्लाम को मानने वाले लोगों की है। परंतु, हाल ही के समय में यहाँ भी एक बड़ा बदलाव देखने में आ रहा है और यहाँ नागरिक सनातन हिंदू धर्म के प्रति आकर्षित होते दिखाई दे रहे हैं। यहाँ सनातन हिंदू धर्म की लहर इतनी तेजी से उठी है कि हर तरफ हिंदू धर्म की आस्था एवं आध्यात्म का फैलाव दिखाई दे रहा है। यहां के युवा विशेष रूप से भगवत गीता पढ़ने की ओर आकर्षित हो रहे हैं और हिंदू धर्म को समझने का प्रयास कर रहे हैं। एक कजाकिस्तानी महिला मारीना टारगाकोवा की भगवत गीता को पढ़कर हिंदू धर्म के प्रति रुचि इतनी बढ़ी है कि अब उसने जैसे बीड़ा ही उठा लिया है कि वह कजाकिस्तान में सनातन हिंदू धर्म को फैलाने का प्रयास लगातार करती नजर आ रही है।

अशोक "प्रवृद्ध"

समस्त प्रवृत्तियों का प्रेरक व अधिष्ठाता परमात्मा

इस दृश्यमान जगत अर्थात इस लोक में देखने में यह आता है कि तन्तुवाय अथवा तक्षा घट, पट, पीढ़ी आदि बनाने की इच्छा होने पर कुंभकार पहले सामग्री लेकर कहीं पर बैठ जाता है, और फिर घड़ा आदि पात्र का निर्माण करता है। ऐसे में मन में प्रश्न उत्पन्न होता है कि लोक में व्यवहार में दिखाई देने की भांति ही सृष्टि निर्माण हेतु ईश्वर को भी होना चाहिए। फिर मन में प्रश्न उत्पन्न होता है कि उस परमात्मा के बैठने का स्थान अर्थात अधिष्ठान कौन सा था? जगत बनाने के लिए आरंभ करने की सामग्री कौन सी थी? जगत निर्माण की क्रिया कैसी थी? जिस काल में सर्वद्रष्टा विश्वकर्मा सर्वकर्त्ता परमात्मा भूमि को और द्युलोक को उत्पन्न करता हुआ अपने महत्व से सम्पूर्ण जगत को आच्छादित करता है। उस समय इसके समीप कौन सी सामग्री और अधिष्ठान था? लोक में लोगों के वन में से वृक्ष काटकर अनेक प्रकार के भवन आदि बना लेने को देखकर भी मन में ऐसा प्रश्न उत्पन्न होता है कि ईश्वर के निकट कौन सा वन है? सृष्टि के आदिकाल में कौन सा वन था? कौन सा वह वृक्ष था, जिस वन और वृक्ष से द्यावापृथ्वी अर्थात द्युलोक और पृथ्वी को काटकर वह इतना शोभित बनाता है, सम्पूर्ण जगत को पकड़े हुए वह जिसके ऊपर स्थित है? ऐसा एक जगत बनाने की सामग्री कौन सी है? और सबको बनाकर एवं पकड़े हुए वह, कैसे खड़ा है? ऐसे सामान्य लगने वाले प्रश्नों का कोई तथ्यपूर्ण उत्तर हमारे पास नहीं है, लेकिन मन में उठते इन प्रश्नों का उत्तर वेद में स्वयं परमात्मा देता हुआ कहता है–

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो
विश्वतोबाहुरुत विश्वत–स्पात।
सं बाहुभ्यां धमति
संपतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवएकः।।

अर्थात वह परमात्मा सर्वत्र जिसका नेत्र है, जो सब देख रहा है, सर्वत्र जिसका बाहु है और सर्वत्र जिसका पैर है, जो एक महान देव है, वह प्रथम बाहु से सब पदार्थ में गति देता है। तब पतनशील व्यापक परमाणुओं से द्यावाभूमि अर्थात द्युलोक और भूमि को उत्पन्न करता हुआ एक देव निराधार विद्यमान है।

परमात्मा के सर्वव्यापक होने के कारण उसके आधार का कोई प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। जो एक देशीय होता है वह आधार की अपेक्षा करता है। इस दृश्यमान संसार में ईश्वर ऊपर, नीचे, चारों तरफ और अभ्यंतर पूर्ण है। इसलिए इसके आधार पर विचार करने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। वैदिक मतानुसार पतत्र अर्थात पतनशील–अतिचंचल गतिमान पदार्थ सदैव ही विद्यमान रहता है। न वह कभी उत्पन्न हुआ, न होता, न होगा, वह शाश्वत पदार्थ है। उन्हीं पत्र में गति देकर अपनी निरीक्षण में यह सारी सृष्टि रचा करता है। इससे यह सिद्ध है कि परमात्मा इस जगत का निमित्त कारण है। जीवात्मा और प्रकृति भी नित्य अज वस्तु है। इन्हीं दोनों की सहायता से वह ब्रह्म सृष्टि रचा करता है। वैदिक मतानुसार जगत को बनाने वाली शक्ति का नाम परमात्मा है, जिसको ईश्वर, परमेश्वर, ब्रह्म आदि अनेक नामों से वेदों में संज्ञायित किया गया है। परमात्मा इस पृथ्वी, चाँद, सूरज आदि समस्त लोक–लोकान्तर रूप जगत को बनाने वाला है। वह जिस मूलतत्त्व से इस जगत को बनाता है, उसका नाम प्रकृति है। प्रकृति त्रिगुणात्मक कही जाती है। वे तीन गुण हैं–सत्व, रजस् और तमस। इन तीन प्रकार के मूल तत्त्वों के लिए गुण पद का प्रयोग इसीलिए किया जाता है कि ये तत्त्व आपस में गुणित होकर, एक–दूसरे में मिथुनीभूत होकर, परस्पर गुँथकर ही जगद्रूप में परिणत होते हैं। जगत की रचना पुण्यापुण्य, धर्माधर्म रूप

शुभ–अशुभ कर्मों के करने और उनके फलों को भोगने के लिये की जाती है। इन कर्मों को करने और भोगने वाला एक और चेतन तत्त्व है, जिसको जीवात्मा कहा जाता है। ये तीनों पदार्थ अनादि हैं–ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति।

इस दृश्यमान जगत को देखने से इसका विकारी होना स्पष्ट होता है। जगत के अनादि–अनन्त एक रूप होने से यह नित्य माना जाना चाहिए। नित्य पदार्थ अपने रूप में कभी परिणामी या विकारी नहीं होता। परंतु जागतिक पदार्थों में प्रतिदिन परिणाम होते देखे जाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि पृथ्व्यादि लोक–लोकान्तरों की दृश्यमान स्थिति अपरिणामिनी अथवा अविकारिणी नहीं है। इसमें परिणाम का निश्चय होने से यह सिद्ध है कि यह बना हुआ पदार्थ है, और इसके बना हुआ मानने से इसके बनाने वाले को भी मानना ही पड़ेगा। पृथ्व्यादि समस्त जगत जड़ पदार्थ है, चेतनाहीन। इसका मूल उपादान तत्त्व भी जड़ है। किसी भी जड़ पदार्थ में चेतन की प्रेरणा के बिना कोई क्रिया होना संभव नहीं। चेतना के सहयोग के बिना किसी जड़ पदार्थ में स्वतः प्रवृत्ति होती नहीं देखी जाती। और न इसके लिए कोई युक्ति है, न ही कोई दृष्टान्त उपलब्ध है। स्वचालित यन्त्रों का निर्माण तो प्रत्यक्ष देखा जाता है। उनको बनाने वाला शिल्पी उसमें ऐसी व्यवस्था रखता है, जिसे स्वचालित कहा जाता है। यन्त्र अपने–आप नहीं बन गया है, उसको बनाने वाला एक चेतन शिल्पी है। और उस यन्त्र की निगरानी व साज–संवार भी बराबर करनी पड़ती है, यह सब चेतन सहयोगसापेक्ष है। इसलिए यह समझना भूल है कि पृथ्व्यादिजगत अपने मूल उपादान तत्त्वों से चेतन निरपेक्ष रहता हुआ स्वतः परिणत हो जाता है। इसलिए जगत के बनाने वाले ईश्वर को मानना होगा।

यह सत्य है कि ईश्वर जगत को बनाने वाला अवश्य है, पर वह स्वयं जगत के रूप में परिणत नहीं होता। ईश्वर चेतन तत्व है, जगत जड़ पदार्थ है। चेतन का परिणाम जड़ अथवा जड़ का परिणाम चेतन होना संभव नहीं। चेतन स्वरूप से सर्वथा अपरिणामी तत्व है। और यह भी सत्य है कि न चेतन जड़ बनता है और न जड़ चेतन बनता है। चेतन सदा चेतन है, जड़ सदा जड़ है। इससे यह स्पष्ट होता है कि जड़ जगत जिस मूल तत्व का परिणाम है, वह जड़ होना चाहिए। इसलिए चेतन ईश्वर से अतिरिक्त एक मूल उपादान तत्त्व है, जिसका नाम प्रकृति है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर अपनी शक्ति से जगत को उत्पन्न करता है। यहाँ परमेश्वर की शक्ति प्रकृति है। सर्वशक्तिमान पद का अर्थ भी यही है कि जगत की रचना करने में ईश्वर को अन्य किसी कर्त्ता के सहयोग की अपेक्षा नहीं रहती। वह इस कार्य के लिए पूर्णतः शक्त है, अप्रतिम समर्थ है। फलस्वरूप यह जगत परिणाम प्रकृति का ही होता है। ईश्वर केवल इसका निमित्त, प्रेरयिता, नियन्ता व अधिष्ठाता है। यही सत्यस्वरूप प्रकृति सब जगत का मूल घर और स्थिति का स्थान है।

उल्लेखनीय है कि लोक में किसी रचना के हेतु तीन प्रकार के देखे जाते हैं। प्रत्येक कार्य का कोई बनाने वाला होता है, कुछ पदार्थ होते हैं, जिनसे वह कार्य बनाया जाता है, कुछ सहयोगी साधन होते हैं। पहला कारण निमित्त कहलाता है, दूसरा उपादान और तीसरा साधारण। संसार में कोई ऐसा कार्य संभव नहीं, जिसके ये तीन कारण नहीं है। इस दृश्यादृश्य जगत को कार्य माने जाने से उसके तीनों कारणों का होना आवश्यक है। इसमें जगत की रचना का निमित्त कारण ईश्वर, उपादान कारण प्रकृति तथा जीवों के कृत शुभाशुभ कर्म अथवा धर्माधर्म आदि साधारण कारण होते हैं। इसलिए यह तीनों पदार्थ अनादि हैं। पुनः ध्यातव्य है कि ब्रह्म के अपने से जगत को बनाने से उसे विकारी या परिणामी होना चाहिए। ब्रह्म चेतन तत्त्व है, चेतन कभी विकारी नहीं होता। चेतन ब्रह्म का परिणाम जगत जड़ नहीं हो सकता, क्योंकि कारण के विशेष गुण कार्य में अवश्य आते हैं। या तो जगत भी चेतन होता, या फिर कार्य जड़–जगत के अनुसार उपादान कारण ईश्वर या ब्रह्म को भी जड़ मानना पड़ता, पर न जगत चेतन है, और न ईश्वर जड़, इसलिए ईश्वर को जगत का उपादान कारण नहीं माना जा सकता। समस्त विश्व परिणाम प्रकृति का ही है, प्रकृति से होने वाली समस्त प्रवृत्तियों का प्रेरक व अधिष्ठाता परमात्मा रहता है। वह स्वयं विश्व के रूप में परिणत नहीं होता, इसलिए वह विश्व का केवल निमित्त कारण है, उपादान कारण नहीं हो सकता।

gashok71@gmail.com

हिंदू धर्म, साम्यवाद और कांग्रेस पर डॉ. अंबेडकर के विचार

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल

महान देशभक्त और बहुमुखी व्यक्तित्व वाले डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर राष्ट्र से जुड़े सभी मुद्दों पर स्पष्ट और मुखर थे। इस तथ्य के बावजूद कि कम्युनिस्टों और कई राजनीतिक हस्तियों ने उन्हें हिंदू धर्म के विरोधी के रूप में चित्रित किया है। हालांकि, उन्होंने कभी भी देश के अतीत और संस्कृति का तिरस्कार नहीं किया; बल्कि, उन्होंने उस समय प्रचलित अंधविश्वासी प्रथाएँ और व्यापक जातिगत भेदभाव का तिरस्कार किया। उन्होंने अपनी पुस्तक 'रिडल्स ऑफ हिंदूइज्म' में यहाँ तक उल्लेख किया है कि, जबकि पश्चिम का मानना है कि लोकतंत्र का आविष्कार उन्होंने किया था, हिंदू 'वेदांत' में इसके बारे में और भी प्रमुख और स्पष्ट चर्चाएँ हैं, जो किसी भी पश्चिमी अवधारणा से पुरानी हैं।

बाबासाहेब हिंदू विरोधी नहीं थे, लेकिन वे हिंदू धर्म की कुछ कुप्रथाओं और कुछ अनुचित रीति–रिवाजों के विरोधी थे। अगर उन्हें हिंदू धर्म से नफरत होती, तो वे हिंदू धर्म को और कमजोर करने के लिए इस्लाम या ईसाई धर्म अपना लेते। हालाँकि, उन्होंने बौद्ध धर्म को अपनाया, क्योंकि इसकी मान्यताएँ हिंदू धर्म से बहुत मिलती–जुलती हैं। हिंदू धर्म के कई आलोचक हिंदू धर्म के खिलाफ़ उनकी कुछ पंक्तियों का उल्लेख करते हैं, लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि वे उस समय की प्रतिक्रियाएँ थीं और प्रतिक्रियाएँ क्षणभंगुर भावनाएँ होती हैं, जो किसी के चरित्र या विचार प्रक्रिया को निर्धारित नहीं कर सकती हैं। अधिकांश प्रतिक्रियाएँ कुछ प्रथाओं के खिलाफ़ गुस्से से प्रदर्शित हुई थीं, इसलिए यह दावा करना बेकार है कि वे हिंदू विरोधी थे। जब हम अपने परिवार के सदस्यों के लिए कठोर शब्दों का उपयोग करते हैं, तो हम रचनात्मक बदलाव लाने के लिए प्यार से ऐसा करते हैं, जैसा कि डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने किया था। उस समय उनकी प्रसिद्धि और शक्ति उन्हें हिंदुओं और भारत को महत्वपूर्ण नुकसान पहुँचाने की अनुमति दे सकती थी, हालाँकि वे एक देशभक्त थे

और तथ्यों से अवगत थे। क्या हम कल्पना कर सकते हैं कि अगर उन्होंने ईसाई धर्म या इस्लाम स्वीकार कर लिया होता तो क्या होता?

उन्हें पता था कि हर धर्म और विचारधारा में खामियाँ होती हैं, जिन्हें संबोधित करने और सुधारने की आवश्यकता होती है। उन्हें उम्मीद थी कि हिंदू सामाजिक असमानता को खत्म करने के लिए कदम उठाएंगे, इसलिए उन्होंने हिंदू नेताओं के लिए सुधारात्मक कार्रवाई करने के लिए एक समय सीमा निर्धारित की। हालाँकि, हिंदुओं के बीच बड़े पैमाने पर जाति विभाजन, साथ ही मुगलों और अँग्रेजों द्वारा समय–समय पर गुलामी की मानसिकता को बढ़ावा दिया गया, जिससे हिंदुओं के लिए सामाजिक असमानता के इस मुद्दे को उस समय दूर करना असंभव हो गया। डॉक्टर अंबेडकर ने महसूस किया कि काँग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टियों द्वारा खड़ी की गई बाधाएँ भी हिंदू पतन में योगदान दे रही थीं। काँग्रेस, साम्यवाद, इस्लाम और ईसाई धर्म के खिलाफ उन्होंने खुलकर विचार रखे थे। आइए काँग्रेस और साम्यवाद पर उनके दृष्टिकोण की जाँच करें।' **उन्होंने कम्युनिस्ट विचारधारा के बारे में क्या कहा।'**

"मानवता केवल आर्थिक मूल्यों को ही नहीं चाहती, वह आध्यात्मिक मूल्यों को भी बनाए रखना चाहती है। स्थायी तानाशाही ने आध्यात्मिक मूल्यों पर कोई ध्यान नहीं दिया है और ऐसा लगता नहीं

है कि वह ऐसा करने का इरादा रखती है। कम्युनिस्ट दर्शन भी उतना ही गलत लगता है, क्योंकि उनके दर्शन का उद्देश्य सूअरों को मोटा करना है, मानो मनुष्य सूअरों से बेहतर नहीं है। मनुष्य को भौतिक रूप से भी विकसित होना चाहिए और आध्यात्मिक रूप से भी।' संदर्भ : खंड 3, बुद्ध या कार्ल मार्क्स, पृष्ठ संख्या 461–462,

डॉ. अंबेडकर ने सही कहा कि केवल भौतिकवाद पर ध्यान केंद्रित करने से स्वार्थ, लालच और अवसरवाद बढ़ता है। वे मानवता से दूर हो जाते है, जिसके कारण वे कभी भी समाज या राष्ट्र को प्राथमिकता नहीं दे पाते है। समाज और राष्ट्र कभी भी शांतिपूर्ण नहीं होंगे, इसलिए आध्यात्मिक विशेषताएँ व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और दुनियाँ के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

डॉ. अंबेडकर ने अपनी उत्कृष्ट कृति 'एनिहिलेशन ऑफ कास्ट' में स्पष्ट रूप से कहा कि कम्युनिस्ट व्यापक आर्थिक क्रांति की उम्मीद नहीं कर सकते, जबकि श्रमिक जाति के आधार पर विभाजित हैं। मान लीजिए कि अगर वे आर्थिक क्रांति शुरू करने में सफल रहे, तो उन्हें जारी रखने के लिए जाति के मुद्दे को संबोधित करना होगा। क्योंकि समानता के लिए भाईचारे की आवश्यकता होती है। हालाँकि, भाईचारे की अनुपस्थिति में स्वतंत्रता और समानता की गारंटी नहीं दी जा सकती है, जिसे जातियों के साथ हासिल करना असंभव है।

उन्होंने कहा, क्या कम्युनिस्ट यह कह सकते हैं कि अपने मूल्यवान लक्ष्य को प्राप्त करने में उन्होंने अन्य मूल्यवान लक्ष्यों को नष्ट नहीं किया है? उन्होंने निजी संपत्ति को नष्ट कर दिया है। यह मानते हुए कि यह एक मूल्यवान लक्ष्य है, क्या कम्युनिस्ट यह कह सकते हैं कि इसे प्राप्त करने की प्रक्रिया में उन्होंने अन्य मूल्यवान लक्ष्यों को नष्ट नहीं किया है? अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उन्होंने कितने लोगों को मारा है। क्या मानव जीवन का कोई मूल्य नहीं है? क्या वे मालिक की जान लिए बिना संपत्ति नहीं ले सकते थे?

स्वर्गीय श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी ने डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर द्वारा समर्थित विचारों पर श्रमिकों और किसानों के लिए संगठन की स्थापना की। जाति का उपयोग संगठन बनाने के लिए नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि यह व्यक्तियों को आर्थिक वस्तुओं के रूप में देखता है और उनका समाज और राष्ट्र के खिलाफ उपकरण के रूप में उपयोग किया जाता है। अपनी शुरुआत से ही, साम्यवाद ने समाज को विभाजित करने और नुकसान पहुँचाने के लिए इसी रणनीति का इस्तेमाल किया है, यही वजह है कि डॉ. बाबासाहेब इसके सख्त खिलाफ थे। साम्यवाद सिद्धांत में तो ठीक लगता है, लेकिन व्यवहार में पूरी तरह विफल है। साम्यवाद के साथ समस्या 'काम करवाने' का उसका तरीका है। सिद्धांतों के नाम पर, कम्युनिस्ट सही इतिहास को बदल देंगे, निर्दोष लोगों को मार देंगे और मीडिया को सेंसर कर देंगे।

नवंबर 2017 में हार्वर्ड यूनिवर्सिटी की लॉरा निकोल ने एक लेख में कहा, 'हमें उन पीड़ितों के इतिहास को नहीं भूलना चाहिए, जिनके पास आवाज़ नहीं है, क्योंकि वे अपनी कहानियों के लिखे जाने के बाद जीवित नहीं बचे। सबसे ज़रूरी बात यह है कि हमें इसे दोहराने के प्रलोभन का विरोध करना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि साम्यवाद वर्तमान स्थिति पर हमला नहीं कर रहा है, बल्कि एक हिंसक सिद्धांत है, जिसे सभी को समझना चाहिए।

'डॉ. अंबेडकर ने सरकार क्यों छोड़ी और काँग्रेस के बारे में उनके क्या विचार थे ?'

डॉ. अंबेडकर कई महत्वपूर्ण विषयों पर अपने विचार रखते थे और पंडित नेहरू और कैबिनेट में शामिल अन्य काँग्रेसी मंत्रियों से कुछ मुद्दों में असहमत थे। कश्मीर मुद्दे को निपटने के पंडित नेहरू के तरीके पर उनकी आपत्तियाँ, संविधान के अनुच्छेद 370 का विरोध, जो जम्मू–कश्मीर को विशेष अधिकार देता है, समान नागरिक संहिता के लिए उनका समर्थन और हिंदू कोड बिल को रोकने के लिए संसद से उनकी निराशा, जिसे उन्होंने तैयार किया था, इन सभी ने उन्हें कैबिनेट में अपनी बढ़ती अस्थिर स्थिति से अलग होने में योगदान दिया। डॉ. अंबेडकर ने कई मौकों पर कश्मीर विषय पर चर्चा की। 10 अक्टूबर, 1951 को डॉ. अंबेडकर ने भारत की विदेश नीति के बारे में चिंता व्यक्त करते हुए कैबिनेट से इस्तीफा दे दिया। डॉ. अंबेडकर ने पंडित नेहरू पर भारत के पिछड़े हिंदुओं, अनुसूचित जातियों, जनजातियों और पूर्वी पाकिस्तान (अब बाँग्लादेश) के लोगों की तुलना में, विशेष रूप से कश्मीर में मुसलमानों को प्राथमिकता देने का आरोप लगाया। सिखों, ईसाइयों और अन्य धार्मिक समूहों के खिलाफ कई अत्याचार किए गए, लेकिन सरकार ने उन पर बहुत कम ध्यान दिया। सरकार ने अपना सारा ध्यान कश्मीर पर केंद्रित कर दिया। डॉ. अंबेडकर ने विभाजन के साथ पूर्ण जनसांख्यिकीय पृथक्करण की वकालत की, लेकिन उनकी आवाज कभी नहीं सुनी गई।

काँग्रेस सूरज और चाँद तक नहीं टिकेगी–'काँग्रेस कब तक टिकेगी?' काँग्रेस पंडित नेहरू है, और पंडित नेहरू काँग्रेस है। लेकिन, क्या पंडित नेहरू अमर हैं ? जो कोई भी इन मुद्दों पर विचार करेगा, उसे पता चल जाएगा कि काँग्रेस सूरज और चाँद तक नहीं टिकेगी। इसे अंततः समाप्त होना ही है।'

जाति का शोषण – 'काँग्रेस हमेशा जीतती है। लेकिन कोई आश्चर्य नहीं करता कि काँग्रेस क्यों जीतती है। इसका उत्तर यह है कि काँग्रेस बेहद लोकप्रिय है। लेकिन काँग्रेस क्यों लोकप्रिय है? सच्चाई यह है कि काँग्रेस हमेशा उन जातियों से उम्मीदवार बनाती है, जो निर्वाचन क्षेत्रों में बहुमत रखती हैं। जाति और काँग्रेस का घनिष्ठ संबंध है। जाति व्यवस्था का शोषण करके ही काँग्रेस जीतती है।'

जब पेशेवर लोग डॉ. अंबेडकर का व्यापक दृष्टिकोण और निष्पक्ष दृष्टिकोण से विश्लेषण करना शुरू करेंगे, तो लोगों को वास्तविकता की गहरी समझ प्राप्त होगी और वे महसूस करेंगे कि वे हिंदू धर्म के विरोधी नहीं थे, बल्कि सामाजिक प्रासंगिकता की कुछ प्रथाओं में रचनात्मक संशोधन करने की सच्ची सोच रखते थे। इस शानदार देशभक्त और मानवता के महान नेता को नमन।

pankajjayswal1977@gmail.com

अस्सी प्रतिशत लोगों की अनदेखी कर कैसे जीतेगा इंडी एलायंस

डॉ उमेश प्रताप वत्स

अठारहवें लोकसभा चुनाव अपने चरम पर चल रहे हैं। बढ़त बनाने के लिए प्रत्येक पार्टी के नेता अपनी–अपनी बुद्धि अनुसार कुछ नया दिखाने का प्रयास करते रहते हैं और इस प्रयास में कई बार वे अपनी मर्यादाओं को भूल जाते हैं तथा ऐसा काम कर बैठते हैं कि उन्हें राजनीतिक लाभ की अपेक्षा बहुत नुकसान भी उठाना पड़ता है। देश भर के साथ ही बिहार में भी लोकसभा चुनाव के लिए प्रचार जोरो–शोरों पर है। चुनाव प्रचार के दौरान ही लालू प्रसाद के लाड़ले व राज्य के पूर्व उपमुख्यमंत्री राजद नेता तेजस्वी यादव के एक वीडियो ने बिहार की सियासत में खानपान को लेकर धमाल मचा रखा है। बिहार क्या देशभर में इस विडियो की चर्चा हो रही है। हुआ यह कि तेजस्वी यादव ने वीआईपी प्रमुख मुकेश सहनी के साथ नवरात्र के पहले ही दिन मछली खाते हुए एक वीडियो सोशल मीडिया पर पोस्ट किया। फिर क्या था, सोशल मीडिया में इस विडियो को लेकर बवाल मच गया। सब अपनी–अपनी राजनीतिक रोटियाँ सेंकने लगे। मुकेश सहनी वीडियो में ही विरोधियों को चिढ़ाते हुए कहते हैं कि उनके इस वीडियो के बाद कुछ लोगों को मिर्ची लगेगी और हुआ भी कुछ ऐसा ही। और मिर्ची लगे भी क्यों न। आप अपने घर में कब क्या खाते हो, यह आपका निजी मामला है, कोई तुम्हें पूछने अथवा रोकने नहीं आयेगा कि क्या खा रहे हो? क्यों खा रहे हो? किन्तु आप आदि शक्ति दुर्गा के पवित्र नवरात्रे के दौरान सोशल मीडिया में अपने प्लेन में बैठकर थाली में से मछली फ्राई उठाकर दिखा–दिखाकर, चिढ़ा–चढ़ाकर खाओगे कि रखो तुम देवी के नवरात्रे, मरो भूखे उपवास में, हम तो इसी तरह मस्ती से मछली खायेंगे और गुलछर्रे उड़ायेंगे। यह वायरल वीडियो केवल भाजपा के नेताओं या कार्यकर्ताओं ने ही नहीं देखी अपितु उन करोड़ो–करोड़ों भारतीयों ने भी देखी है, जो अपनी अध्यात्मिकता को राजनीति से कोसों दूर रखते हैं। उन्होंने भी देखी है, जिन्होंने न भाजपा से कुछ लेना ना विपक्षी पार्टियों से। उन सबको

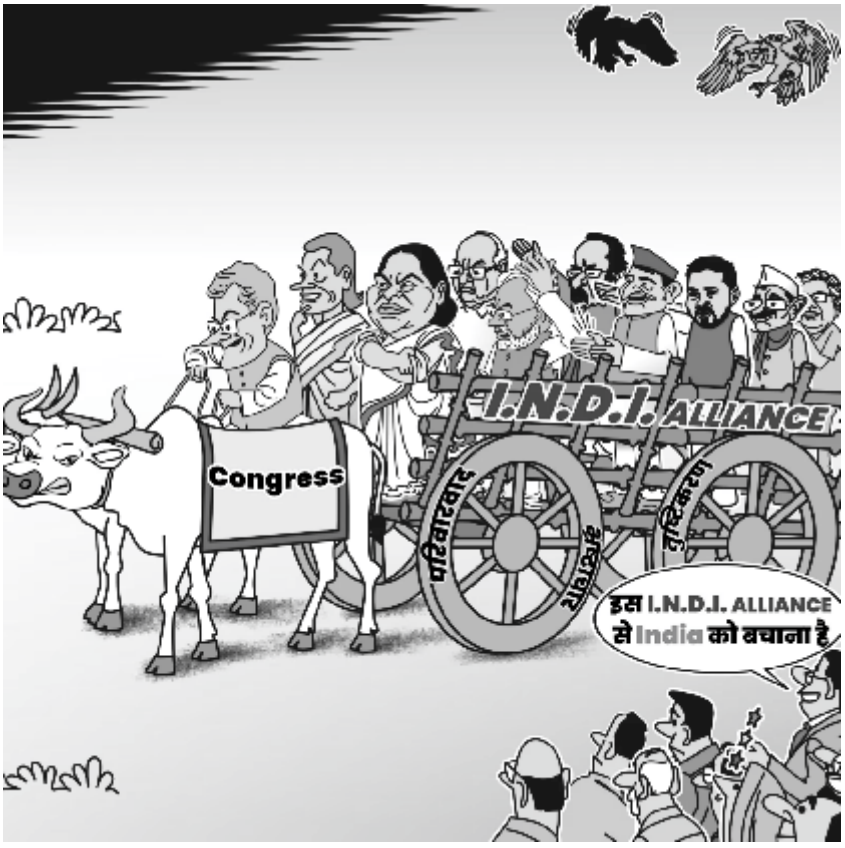

तुम्हारी यह असभ्यता क्यों न खले, उन सब तटस्थ भारतीयों को तुम्हारे इस दैत्य कार्य से मिर्ची क्यों न लगे।

यद्यपि सारा देश जानता है कि देशभर में शाकाहारी परिवार ऊंगलियों पर गिने जा सकते हैं। भारत के रजिस्ट्रार जनरल ने 2014 में एक सर्वे कराया था। यह जानने के लिए कि देश के किस राज्य में शाकाहारी और मासांहारी लोगों की सँख्या कितनी है। इसके मुताविक बिहार में 92.45 प्रतशित लोग मांसाहारी थे। लिस्ट में तेलंगाना सबसे ऊपर था, जहाँ 98.7 प्रतशित लोग मांसाहारी थे। देश में आमतौर पर नॉनवेज खाने वाले बहुसँख्यक हैं, जो कि लगभग 63 प्रतिशत हैं। दिल्ली में 63.2 प्रतिशत लोग नॉनवेज खाते हैं, उत्तर प्रदेश में 55 प्रतिशत लोग, मध्य प्रदेश में 51 प्रतिशत लोग नॉनवेज खाते हैं, महाराष्ट्र में 59 प्रतिशत लोग, सेवन सिस्टर प्रदेश व दक्षिण भारत की बात करें, तो यह आँकड़ा 80 प्रतिशत से 99 प्रतिशत तक चला जाता है, जबकि वैज्ञानिक रूप से मानव का जबड़ा माँस खाने के लिए बना ही नहीं, किंतु मुँह के स्वाद के लिए ही अधिकतर लोग माँस खाते हैं। राजस्थान देश का इकलौता राज्य है, जहाँ सबसे कम आबादी मांस खाती है। डेटा के मुताबिक राजस्थान में महज 31.04 फीसदी आबादी मांस खाती है। हाल में राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण–5 के आँकड़ों में बताया गया कि देश के 16 राज्यों में लगभग 90 प्रतिशत लोग मीट, मछली या चिकन खाते हैं, किंतु ये आश्चर्यजनक आँकडे नियमित माँस खाने वालों के नहीं हैं। उत्तर व मध्य भारत में इन माँसाहारियों में से आधे से अधिक ऐसे लोग हैं, जो महीने अथवा सप्ताह में एक–आध बार शौकिया माँस भक्षण करते हैं, जो कि पावन त्योहारों पर

सदैव माँस के सेवन से दूरी बनाकर रखते हैं। प्यू रिसर्च के इसी सर्वे में ये भी बताया गया है कि कितने प्रतिशत लोग ऐसे हैं, जो माँसाहारी तो हैं, लेकिन कई मौकों पर माँस खाने से बचते हैं। सर्वे के मुताबिक 67 फीसदी मुस्लिम और 66 फीसदी क्रिश्चियन लोग कई विशेष अवसरों पर कुछ कारणों से माँस का सेवन करने से बचते हैं। हिंदुओं में 44 फीसदी शाकाहारी को छोड़कर बाकी 39 फीसदी लोग ऐसे हैं, जो कई त्योहारों के मौकों पर माँस खाने से परहेज करते हैं, या फिर बिल्कुल नहीं खाते हैं।

देश में कितने लोग शाकाहारी है, अथवा कितने माँस खाते हैं, बात यह नहीं है। निःसंदेह देश की बड़ी आबादी माँसाहारी हैं, किंतु यह भी सच है कि नवरात्र जैसे पावन पर्व पर ये लोग त्योहारों का व समाज की आस्था का सम्मान करते हैं और इन विशेष अवसरों पर माँस के सेवन से बचने का प्रयास करते हैं, तो राजद नेता तेजस्वी यादव नवरात्र में दिखा–दिखाकर फिर किस आबादी को तुष्ट करने का प्रयास कर रहे थे, तथा किस आबादी को मिर्च दिखाकर इशारा कर रहे थे। आईक्यू टेस्ट करने के लिए क्या थाली में परोसी गई मछली को उठाकर दिखाना आवश्यक था। हमारे देश में एक मान्यता रही है कि भजन, भोजन व व्यायाम पर्दे में ही श्रेष्ठ है।

देश में तुष्टीकरण का ऐसा वातावरण बना है कि किसी भी हद तक जाना पड़े, झूठे–सच्चे जो भी वायदे करने पड़े, न चाहते हुए भी स्वयं को मुस्लिम समुदाय का हमदर्द दर्शाने हेतु गोल टोपी पहनकर जाना पड़े, बस! लक्ष्य एक ही है कि फलां–फलां समुदाय की वोट कैसे मिलेगी। कुछ लोगों अथवा कुछ समुदाय को तुष्ट करने के लिए भाजपा से मुखर विरोधी नेतागण देश की लगभग अस्सी प्रतिशत लोगों की अनदेखी कर कैसे जीत पायेंगे। ऐसी वीडियो वायरल करके इंडी एलायंस कैसे मोदी की आँधी का सामना कर पायेगा। इसका दूसरा पहलू यह भी है कि जब वर्षों से आप लोगों को सत्ता में रहने का अवसर मिला, तो, तब आप देश समाज के लिए ऐसा कुछ कर ही नहीं पायें, जिसे जनता के समक्ष प्रस्तुत कर सकें। जब नेता लोग जन समाज के लिए कभी सेवाभाव से कार्य नहीं करते, उनके सुख–दुःख में भागीदार नहीं बनते, तब उन्हें कभी नवरात्रे में मछली फ्राई का षड्यंत्र करना पड़ता है, कभी सावन में इकट्ठे होकर मटन बनाते हुए वीडियो वायरल करनी पड़ती है, कभी केरल में भीड़ के सामने सड़क पर ही बैल को काटकर कुछ भी खाने की माँग का तरीका अपनाना पड़ता है, तो कभी बीफ खाने के नाम पर एक प्रभावशाली लॉबी को तैयार कर सोशल मीडिया के समक्ष सभी संस्कारों को धता बताते हुए प्रस्तुत करना पड़ता है। इनके इन कुतर्क, कुत्सित मानसिकता से उपजे षडयंत्रों के बहकावे में लोग इनको वोट कर भी देते हैं, तब बाद में स्वयं को ठगा सा महसूस करते हैं, क्योंकि न इन्होंने पहले इन समुदायों के लिए कुछ किया था, ना आगे कोई विजन है। देश की मुख्यधारा, देश की संस्कृति, देश की राष्ट्रीय भावना से अलग करके आप किसी भी समाज का कभी भी ना भला कर सकते और ना ही चहुंमुखी विकास।

स्तंभकार : प्रसिद्ध लेखक, कवि एवं कहानीकार भी है।
umeshpvats@gmail.com

नशा समाज में अभिशाप के समान, नशे से दूर रह कर देश, धर्म और समाज के लिए कार्य करें उत्तराखण्ड का नौजवान : अनुज वालिया

ऋषिकेश (उत्तराखण्ड)। विश्व हिन्दू परिषद की युवा शाखा बजरंग दल ने रामोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत जिला ऋषिकेश के प्रखंड रानी पोखरी में कुश्ती प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया। कुश्ती प्रतियोगिता का शुभारंभ बजरंग दल के प्रांत संयोजक अनुज वालिया ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। बजरंग दल द्वारा आयोजित कुश्ती प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने के लिए नेपाल, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल, उत्तरप्रदेश के साथ उत्तराखंड के अनेक जिलों के पहलवान उपस्थित हुए।

बजरंग दल द्वारा आयोजित कुश्ती प्रतियोगिता के शुभारंभ के अवसर पर बजरंग दल के प्रांत संयोजक अनुज वालिया ने कहा कि बजरंग दल समय–समय पर युवाओं को जागरूक करने कार्य करता रहा है और करता रहेगा। आज समाज में नशा एक कुरीति के समान व्याप्त हो रहा हैं। हमें प्रयास करना होगा कि देश के नौजवान नशे की और न जाकर अपने खेल जो भारतीय संस्कृति और संस्कारों से ओतप्रोत हो को आत्मसात करें। नौजवान खेलों से

आकर्षित होकर अपने शरीर को ह्रष्ट–पुष्ट बना कर अपने को स्वस्थ रखे और नशे से दूर रहें। नशा समाज में अभिशाप के समान, नशे से दूर रह कर देश, धर्म और समाज के लिए कार्य करें, उत्तराखण्ड के नौजवान।

बजरंग दल द्वारा आयोजित कुश्ती प्रतियोगिता में उत्तर प्रदेश गाजियाबाद के गौरव पहलवान को हराकर उत्तराखंड रुड़की के राजा पहलवान ने प्रतियोगिता जीतकर सभी के भीतर उत्साह और वाहवाही बटोरी। नेपाल के लकी थापा पहलवान और शेरा पहलवान के बीच हुई तिखी नोंक–झोंक और लकी थापा के दांव–पेंच ने कुश्ती और माहौल को और रोमांचक कर दिया। निर्जला महिला पहलवान के साथ स्थानीय माही नाम की लड़की कुश्ती लड़ने उतरी, जिसका स्थानीय लोगों ने काफी उत्साह बढ़ाया। बजरंग दल के अक्षय त्यागी पहलवान और रुड़की के सोनू पहलवान के बीच भी शानदार कुश्ती प्रदर्शन हुआ।

दुःखालयम् अशाश्वतम्

आचार्य राघवेंद्र दास

दर्शन की उत्पत्ति ही मनुष्य के दुःखों की मीमांसा करते हुए हुई है। सांख्यकारिकाकार श्रीमद् ईश्वर कृष्ण अपने पहली ही कारिका में कहते हैं–

दुःखत्रयाभिघाताज् जिज्ञासा तदपघातके हेतौ।
दृष्टे सोपार्था चेन्नैकान्तात्यन्ततोभावात।।

तो, इस प्रकार दुःख के कारणों की जिज्ञासा और परिहार पर प्राचीन मानीषियों ने मीमांसा की है। श्रीमद भगवद् गीता की दृष्टि में और अन्य दर्शनों में भी बार–बार जन्म–मृत्यु को प्राप्त होना महान दुःख है। श्रीकृष्ण कहते हैं–

मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम।
नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः।।
(श्रीमद्भगवद् गीता, 8.15)

उक्त श्लोक में आत्मतत्व प्राप्ति से दुःखों के घर से जन्म–मृत्यु रूपी दुःख से महात्मागण मुक्ति को प्राप्त होते हैं, ऐसा कहा गया है। वस्तुतः हिन्दू दर्शन ने दुःखों की जो श्रेणियाँ की हैं–आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक, यह जन्म और स्वयं के अस्तित्व–बोध के कारण ही है। साधना और संयम से हम व्यष्टि से समष्टि की अनुभूति करते हैं और दुःखबोध का शमन होता है। पुनर्जन्म दुःखों का घर है और अशाश्वत है। जब हम ईश्वर या आत्मा में स्थित हो जातें हैं, अर्थात् स्वस्वरूप में स्थित होते हैं, तब इससे मुक्ति मिलती है। आदिशंकर ने उस स्वरूप–अनुसंधान को ही भक्ति कहा है। भारतीय दर्शन में भक्ति की विभिन्न व्याख्याएँ मिलती हैं और मनुष्य अपने गुण–सूत्र अनुरूप उसका अनुकरण करता है। वस्तुतः जो विराट दुःख है वह जन्म–मरण ही है। इस दुःख को अभिव्यक्त करते हुए गोस्वामी तुलसी दास जी कहते हैं–जनमत मरत दुसह दुःख होई।

इस दुःख के अभाव हेतु सत्संग आदि विधियाँ शास्त्र निर्दिष्ट हैं। गणेश गीता में आया है–

नानासंगांजनः कुरवन्नैकं साधुसमागम।
करोति तेन संसारे बन्धनं समुपैति सः।।
(गणेश गीता, 2.41)

अर्थात जो मनुष्य अनेक प्रकार की संगति करता है, पर किसी साधु की संगति नहीं करता, वह संसार में बंधन को प्राप्त होता है। यह जो जन्म–मृत्यु का चक्र है, वह स्वस्वरूप की पहचान न होने के करण ही है। स्वस्वरूप की पहचान में साधु–संगत अर्थात् सत्संग का अहम योगदान है। सिंह शावक की कथा प्रसिद्ध ही है। कोई शेर का बच्चा भूल से बकरों के बीच रहने लगा और अपने को बकरा ही समझने लगा। कई महीनों बाद एक दिन शेर ने दहाड़ा, आवाज सुन सभी बकरे भाग रहे

थे, जिसमें सिंह–शावक भी था। जब सिंह ने देखा कि अरे ये अपने बिरादरी का है, तो उसे रोका और उसके स्वरूप की स्मृति कराई, अंततः शावक को ज्ञान हुआ और वह भी अन्य सिंहों की भांति अनुभव करने लगा। कहने का अभिप्राय है कि सत्संग भी वैसे ही हमें ईश्वर का अंश होने की अनुभूति कराता है और अशाश्वत जन्म–मृत्यु को शाश्वत मानने का मिथ्या चक्र टूट जाता है।

लोक में महामृत्युंजय मंत्र प्रसिद्ध है। उक्त मंत्र ऋग्वेद और यजुर्वेद में आया है। इस मंत्र में भी शिव से प्रार्थना की गई है कि मृत्यु से मुक्त करो और अमरता प्रदान करो। इस मंत्र में भी मृत्यु की नश्वरता इंगित है।

आद्यशंकराचार्य जी ने श्रीमद्भगवद् गीता के ऊपर–उल्लिखित श्लोक का भाष्य करते हुए लिखा है–आध्यात्मिक आदि तीनों प्रकार के दुःखों का का जो स्थान है, आधार है अर्थात् समस्त दुःख जिसमें रहते हैं, केवल दुःखों का स्थान ही नहीं जो अशाश्वत भी है, अर्थात् जिसका स्वरूप स्थिर नहीं है, ऐसे पुनर्जन्म को मोक्षरूप परम श्रेष्ठ सिद्धि को प्राप्त हुए महात्मा नहीं पाते। परंतु जो मुझे नहीं प्राप्त होते वे फिर संसार में आते हैं। कठोपनिषद् में यम–नचिकेता संवाद में मर्त्य–अमर्त्य कब होता है, का उल्लेख इस प्रकार है–

यदा सर्वे प्रमुच्यते कामा येस्य हृदि श्रिताः।
अथ मर्त्योमृतो भवत्यत्र ब्रह्म समश्नुते।।
यदा सर्वे प्रभिद्यन्ते हृदयस्येह ग्रन्थयः।
अथ मर्त्योमृतो भवत्येतावद्ध्यनुशासनम्।।
(कठोपनिषद्, 2.3.14–15)

अर्थात जिस समय सम्पूर्ण कामनाएँ, जो जीव के हृदय में आश्रय करके रहती हैं, छूट जाती हैं उस समय वह मरणधर्मा अमर हो जाता है और इस शरीर से ही ब्रह्मभाव को प्राप्त हो जाता है। जिस समय इस जीवन में ही इसके हृदय की सम्पूर्ण ग्रंथियों का छेदन हो जाता है, उस समय यह मरणधर्मा अमर हो जाता है, सम्पूर्ण वेदांतों का इतना ही आदेश है।

उक्त औपनिषदिक सूत्र और गीता के सूत्रों को ध्यान से देखें, तो हिन्दू दर्शन मृत्यु के बाद भी मोक्ष मानता है और जीते जी भी।

अमेरिकी संसद में मंदिरों पर हमले और हिंदूफोबिया की आलोचना का प्रस्ताव किया पेश

इंटरनेशनल डेस्क, 12 अप्रैल। अमेरिका में हिंदुओं और हिंदू धर्म के योगदानों का उल्लेख करते हुए एक प्रमुख भारतीय–अमेरिकी सांसद ने 'हिंदूफोबिया', हिंदू–विरोधी कट्टरता, नफरत और असहिष्णुता की निंदा करते हुए प्रतिनिधि सभा में एक प्रस्ताव पेश किया है। काँग्रेस सदस्य श्री थानेदार द्वारा बुधवार को पेश किए गए प्रस्ताव को सदन की निरीक्षण और जवाबदेही समिति के पास भेजा गया है।

प्रस्ताव में कहा गया है कि अमेरिका में सकारात्मक योगदानों के बावजूद हिंदू–अमेरिकियों को अपनी विरासत और प्रतीकों के बारे में रूढ़िवादिता और दुष्प्रचार का सामना करना पड़ता है तथा वे स्कूलों और कॉलेज परिसरों में छेड़छाड़ के साथ ही भेदभाव, घृणा भाषण तथा पूर्वाग्रह से प्रेरित अपराधों का सामना करते हैं।

प्रस्ताव में कहा गया है कि संघीय जांच ब्यूरो (एफबीआई) की घृणा अपराध सांख्यिकीय रिपोर्ट के अनुसार, मंदिरों और व्यक्तियों को निशाना बनाने वाले हिंदू विरोधी घृणा अपराध हर साल बढ़ रहे हैं, जबकि इसके साथ ही अमेरिकी समाज में 'हिंदूफोबिया' (हिंदू

विरोधी या हिंदुओं के प्रति घृणा की भावना) दुर्भाग्यपूर्ण रूप से बढ़ रहा है। अमेरिका ने 1900 के बाद से दुनियाँ के सभी हिस्सों से 40 लाख से अधिक हिंदुओं का स्वागत किया है, जिसमें विभिन्न नस्ल, भाषा और जातीय पृष्ठभूमि के हिंदू शामिल हैं।

प्रस्ताव के अनुसार, अमेरिका की अर्थव्यवस्था के प्रत्येक आयाम और प्रत्येक उद्योग में हिंदू–अमेरिकियों के योगदान से देश को काफी फायदा हुआ है। 'फाउंडेशन फॉर इंडिया एंड इंडियन डायस्पोरा स्टडीज' के नीति एवं रणनीति प्रमुख खांडेराव कांड ने कहा कि इस साल की पहली तिमाही में श्रद्धालुओं को डराने के लिए अमेरिका में मंदिरों में चोरी के साथ ही तोड़फोड़ की घटनाओं में अचानक वृद्धि हुई है।

(पंजाब केसरी, 12 अप्रैल, 2024 से साभार)

डॉ. आनंद मोहन
सहयोगी - आकांक्षा शुक्ला, सबरीन बशीर, अग्रताबेन वधेल, आलोक मोहन

गंगाजल: शुद्धि का पवित्र प्रवाह

गंगा जल, या गंगा नदी का पवित्र जल, हिंदू धर्म में बहुत महत्व रखता है, जो धार्मिक अनुष्ठानों और मान्यताओं में गहराई से समाया हुआ है।

धार्मिक महत्व :
गंगाजल का आध्यात्मिक सार

गंगा सिर्फ एक नदी नहीं है, बल्कि एक देवी, गंगा माँ के रूप में पूजनीय है, माना जाता है कि मानव जाति की आत्माओं को शुद्ध करने के लिए स्वर्ग से पृथ्वी पर उतरी थीं। इसके पानी को पवित्र और शुद्ध करने वाला माना जाता है, माना जाता है कि इसमें पापों को दूर करने और उन लोगों को आशीर्वाद देने की शक्ति है, जो इसमें स्नान करते हैं, या धार्मिक समारोहों में इसका उपयोग करते हैं।

हिंदू पौराणिक कथाओं में, गंगा की उत्पत्ति राजा भगीरथ की तपस्या की कहानी से जुड़ी हुई है, जो अपने पूर्वजों को एक श्राप से मुक्त करने के लिए दिव्य नदी को पृथ्वी पर लाने के लिए थी। भगवान शिव अपने उलझे हुए बालों के साथ आकाश से गंगा के पतन को रोकने के लिए सहमत हुए, इस प्रकार उनके वेग के बल को पृथ्वी को नष्ट करने से रोक दिया। इस दिव्य हस्तक्षेप ने पृथ्वी पर गंगा नदी की अभिव्यक्ति की, भगीरथ की खोज को पूरा किया और गंगा को 'मोक्ष दायिनी' की उपाधि दी – मोक्ष की दाता। वेदों, पुराणों और विभिन्न धार्मिक ग्रंथों, जैसे हिंदू शास्त्रों में गंगा जल का उल्लेख धार्मिक प्रथाओं में इसके महत्व को रेखांकित करता है। ऋग्वेद गंगा को शुद्ध करने वाली नदी के रूप में प्रशंसा करता है, जो पापों को साफ करने और विश्वासियों को मोक्ष प्रदान करने में सक्षम है। महाभारत में, गंगा में स्नान को आध्यात्मिक शुद्धि और जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति प्राप्त करने के साधन के रूप में दर्शाया गया है।

हिंदू अनुष्ठानों और समारोहों में, गंगा जल का उपयोग, इसके पवित्र गुणों के लिए बड़े पैमाने पर किया जाता है। यह अक्सर शुभ अवसरों के दौरान भक्तों पर छिड़का जाता है, अनुष्ठान के लिए पवित्र जल के कलश में जोड़ा जाता है, और मूर्तियों और मंदिरों के अभिषेक में उपयोग किया जाता है। गंगाजल का महत्व धार्मिक अनुष्ठानों से परे है, यह भी माना जाता है कि इसमें औषधीय गुण होते हैं। कई हिंदू गंगाजल का उपयोग इसके दोनों शारीरिक और आध्यात्मिक उपचार लाभों के लिए करते हैं। अनुष्ठानों में इसके उपयोग के अलावा, गंगा जल का सेवन भक्तों द्वारा शुद्धता के अमृत के रूप में किया जाता है, माना जाता है कि यह न केवल शरीर बल्कि आत्मा को भी शुद्ध करता है, समग्र कल्याण और आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देता है। गंगा जल हिंदू धार्मिक मान्यताओं और प्रथाओं में एक केंद्रीय स्थान रखता है, जो पवित्रता, दिव्यता और जीवन के शाश्वत प्रवाह का प्रतीक है। पौराणिक कथाओं और शास्त्रों में इसका उल्लेख, अनुष्ठानों और समारोहों में इसके व्यापक उपयोग के साथ, एक पवित्र तत्व के रूप में इसके स्थायी महत्व पर प्रकाश डालता है जो विश्वासियों को परमात्मा से जोड़ता है और आध्यात्मिक मुक्ति सुनिश्चित करता है।

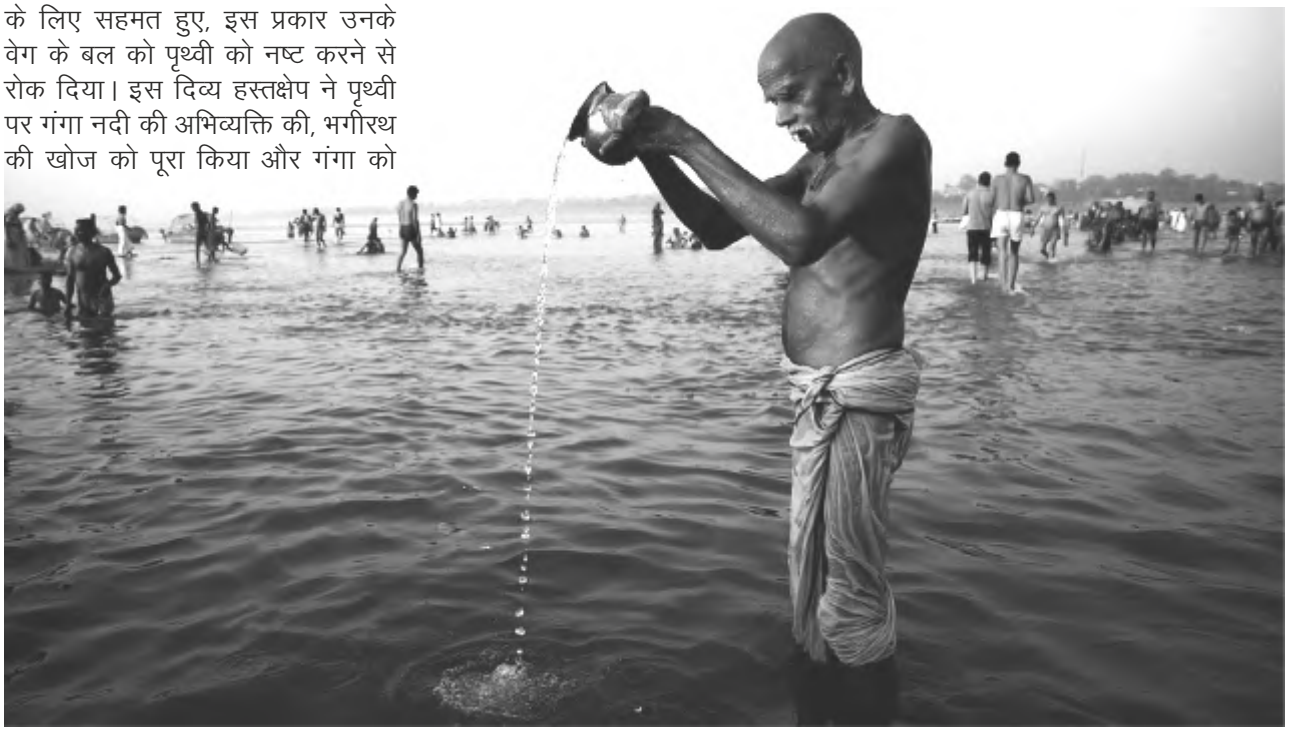

गंगाजल की पौराणिक यात्रा का अनुरेखण

गंगा नदी, हिमालय में गंगोत्री ग्लेशियर से निकलती है, जो भारतीय राज्य उत्तराखंड में स्थित है। यह हिंदू धर्म में सबसे पवित्र और श्रद्धेय नदियों में से एक है, माना जाता है कि यह एक दिव्य उद्देश्य को पूरा करने के लिए स्वर्ग से उतरी है। गंगा की यात्रा लगभग 2,525 किलोमीटर (1,569 मील) तक फैली हुई है, जो बंगाल की खाड़ी में खाली होने से पहले भारत के उत्तरी मैदानों से होकर बहती है। जैसे ही गंगा अपने स्रोत से बहती है, यह विभिन्न राज्यों और शहरों से होकर गुजरती है, अपने मार्ग में भूमि और संस्कृति का पोषण करती है। गंगा के किनारे स्थित कुछ प्रमुख शहरों में ऋषिकेश, हरिद्वार, इलाहाबाद (प्रयागराज), वाराणसी और पटना शामिल हैं। ये शहर गंगा और इसके किनारे स्थित विभिन्न प्राचीन मंदिरों और तीर्थ स्थलों के साथ अपने जुड़ाव के कारण हिंदू धर्म में महत्वपूर्ण धार्मिक महत्व रखते हैं।

गंगा के किनारे सबसे पवित्र स्थानों में से एक हरिद्वार है, जहाँ नदी पहाड़ों को छोड़कर मैदानों में प्रवेश करती है। हरिद्वार, जिसका अर्थ है 'भगवान का प्रवेश द्वार', अपने घाटों के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ भक्त अनुष्ठान करने, पवित्र डुबकी लगाने और गंगा आरती में भाग लेने के लिए इकट्ठा होते हैं, जो देवी को समर्पित पूजा का एक मंत्रमुग्ध कर देने वाला समारोह है। आगे नीचे की ओर प्राचीन शहर वाराणसी स्थित है, जिसे भारत की आध्यात्मिक राजधानी माना जाता है। वाराणसी, जिसे काशी के नाम से भी जाना जाता है, दुनियाँ के सबसे पुराने लगातार बसे शहरों में से एक है और भगवान शिव के शहर के रूप में प्रतिष्ठित है। हजारों तीर्थयात्री हर साल गंगा में स्नान करने, अंतिम संस्कार करने और इसके पवित्र घाटों पर आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए वाराणसी जाते हैं। गंगा के किनारे एक और महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल इलाहाबाद है, जिसे अब आधिकारिक तौर पर प्रयागराज के नाम से जाना जाता है, जहाँ नदी यमुना और पौराणिक सरस्वती नदियों से मिलती है। इन तीन नदियों का संगम, जिसे त्रिवेणी संगम के

नाम से जाना जाता है, हिंदू धर्म में अत्यन्त शुभ माना जाता है, और लाखों भक्त यहाँ पवित्र डुबकी लगाने के लिए इकट्ठा होते हैं, खासकर कुंभ मेले के दौरान, हर बारह साल में होने वाली एक विशाल धार्मिक सभा। गंगा उत्तर भारत के उपजाऊ मैदानों के माध्यम से अपनी यात्रा जारी रखती है, कृषि का पोषण करती है और अंततः बंगाल की खाड़ी तक पहुँचने से पहले लाखों लोगों को अपने किनारे बनाए रखती है।

वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि : गंगाजल की शुद्धता और उपचार गुणों की खोज

गंगा के पानी में अनुष्ठानिक डुबकी संक्रमण के खिलाफ उनकी कथित उपचारात्मक शक्ति और जन्म और पुनर्जन्म के कर्म चक्रों से मुक्ति के लिए पूजनीय हैं। नदी के पानी का उपचारात्मकता के साथ संबंध ऐतिहासिक सूक्ष्म जीव विज्ञान में भी आधार है : ब्रिटिश जीवाणुविज्ञानी अर्नेस्ट हनबरी हैंकिन ने 1896 में, पहली बार "हैजा रोगाणुओं पर जमुना और गंगा नदियों के पानी की जीवाणुनाशक कार्रवाई" का वर्णन किया, जो कम से कम दो दशकों तक जीवाणु वायरस (जिसे अब बैक्टीरियोफेज के रूप में जाना जाता है) की खोज से पहले था।

गंगा नदी के पानी पर कई वैज्ञानिक अनुसंधान परियोजनाएँ हैं, जो पानी में प्रदूषण के खतरों और नदी द्वारा प्रदान किए गए इलाज और शुद्धिकरण के प्रभावों से संबंधित हैं। गंगाजल उच्च दरों पर स्वयं शुद्ध होता है, बिना खराब हुए लंबे समय तक संग्रहीत किया जा सकता है, या उम्मीद के मुताबिक किसी बीमारियों का कारण नहीं बनता है – कुछ लोग इसके कीटाणुनाशक होने का भी दावा करते हैं। वाराणसी में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में प्रोफेसर गोपाल नाथ और उनकी टीम ने हाल ही में स्थानीय अस्पताल में संक्रमण के इलाज के लिए क्षेत्र से बैक्टीरियोफेज को अलग कर रही है। प्रोफेसर ने गंगा नदी में अत्यधिक प्रतिरोधी बैक्टीरिया के एक समूह की घटनाओं और संभवतः प्रतिरोधी जीवाणु संक्रमणों के इलाज के लिए इस्तेमाल किए जा सकने वाले फेज की घटनाओं का मानचित्रण करने के लिए एक परियोजना भी चलाई। प्रोफेसर नाथ 2000 के दशक की शुरुआत से बैक्टीरियोफेज के साथ काम कर रहे हैं, और सर सुंदरलाल अस्पताल में नैदानिक परीक्षणों के माध्यम से फेज थेरेपी के साथ प्रभावी उपचार की क्षमता के लिए सबूत जमा किए हैं, जो मुख्य रूप से पुराने, गैर–चिकित्सा घावों पर केंद्रित हैं। प्रोफेसर नाथ का दावा है कि 20 वीं शताब्दी की शुरुआत में फ्रांसीसी माइक्रोबायोलॉजिस्ट डीश्हेरेल द्वारा इस तरह के पहले परीक्षणों के बाद भारत में फेज थेरेपी के नैदानिक परीक्षणों को फिर से शुरू किया गया था। गंगा पवित्रता, दिव्यता और जीवन के शाश्वत प्रवाह का प्रतीक बनी हुई है, जो भारत के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक ताने–बाने में गहराई से समाई हुई है।

उच्च रक्तचाप के लिए घरेलु नुस्खे

हाई बी.पी की बीमारी के लिए दवा

आज 90 प्रतिशत से ज्यादा लोग उच्च या निम्न रक्तचाप के शिकार हैं। हमारी रसोई में ही मौजूद हैं ऐसी अनेक जड़ी बूटियाँ, जिनको ले कर आप अपना रक्तचाप घर पर ही सही कर सकते हैं। आइये जानते हैं ये नुस्खे –

दालचीनी

एक बहुत अच्छी दवा है, आप के घर में है, वो है दालचीनी, जो मसाले के रूप में उपयोग होता है वो आप पत्थर में पिस कर, पाउडर बनाकर आधा चम्मच रोज सुबह खाली पेट गरम पानी के साथ खाइए। अगर थोड़ा खर्च कर सकते हैं, तो दालचीनी को शहद के साथ लीजिये, (आधा चम्मच शहद आधा चम्मच दालचीनी) गरम पानी के साथ। ये हाई बी.पी के लिए बहुत अच्छी दवा है।

अर्जुन की छाल

एक और अच्छी दवा है हाई बी.पी. के लिए, वो है अर्जुन की छाल। अर्जुन एक वृक्ष होती है, उसकी छाल को धुप में सुखा कर पत्थर में पिस कर इसका पाउडर बना लीजिये। आधा चम्मच पाउडर, एक ग्लास गरम पानी में मिलाकर उबाल लें, और खूब उबालने के बाद, इसको चाय की तरह पी लें। ये हाई बी.पी. को ठीक करेगा, बी.पी. को ठीक करेगा, मोटापा कम करता है, हार्ट में अगर कोई ब्लौकेज है, तो वो ब्लौकेज को भी निकाल देती है, यह अर्जुन की छाल। डॉक्टर अक्सर ये कहते हैं की दिल कमजोर है आपका अगर दिल कमजोर है, तो आप जरुर अर्जुन की छाल लीजिये दिल बहुत मजबूत हो जायेगा आपका।

अर्जुन और दाल चीनी

या आप इस तरह भी अर्जुन और दाल चीनी को एक साथ इस्तेमाल कर सकते हैं। एक चम्मच अर्जुन की छाल का चूर्ण और आधा चम्मच दाल चीनी का चूर्ण एक गिलास पानी में आधा रहने तक उबालें और फिर छान कर चाय की तरह सोने से पहले पी लें। यह एक अच्छी दवा है जो आप ले सकते हैं पर दोनों में से कोई एक।

मेथी दाना

दूसरी दवा है मेथी दाना, मेथी दाना आधा चम्मच लीजिये, एक ग्लास गरम पानी में और रात को भिगो दीजिये, और सुबह उठ कर पानी को पी लीजिये और मेथी दाने को चबा के खा लीजिये। ये बहुत जल्दी आपकी ब्लौकेज कम कर देगा।

लौकी का रस

एक कप लौकी का रस रोज पीना सबेरे खाली पेट नास्ता करने से एक घंटे पहले और इस लौकी की रस में पांच धनिया पत्ता, पांच पुदीना पत्ता, पांच तुलसी पत्ता मिलाकर, चार काली मिर्च पिस कर ये सब डाल के पीना .. यह कोलेस्ट्रोल को ठीक रखेगा, डाइबिटीज में भी काम आता है। आप दालचीनी लीजिये या मेथी दाना, दोनों में से एक प्रयोग करना है।

बेल पत्र के पत्ते

यह एक मुफ्त की दवा है, बेल के पत्ते–ये उच्च रक्तचाप में बहुत काम आते हैं। पाँच बेल पत्र ले कर पत्थर में पिस कर उसकी चटनी बनाइये, अब इस चटनी को एक ग्लास पानी में डाल कर खूब गरम कर लीजिये, इतना गरम करिए कि पानी आधा हो जाये, फिर उसको ठंडा करके पी लीजिये। ये सबसे जल्दी उच्च रक्तचाप को ठीक करता है।

देशी गाय का मूत्र

एक और मुफ्त की दवा है उच्च रक्तचाप के लिए–देशी गाय का मूत्र पीयें, आधा कप रोज सुबह खाली पेट ये बहुत जल्दी उच्च रक्तचाप को ठीक कर देता है। गोमूत्र डाइबिटीज को भी ठीक कर देता हैं। अगर आप गोमूत्र लगातार पी रहे हैं, तो दमा भी ठीक होता है। अस्थमा भी ठीक होता है। इसमें दो सावधानियाँ ध्यान रखने की है कि गाय शुद्धरूप से देशी हो और वो गर्भावस्था में न हो।

पाकिस्तान में फिर अल्पसंख्यकों पर अत्याचार, तोड़ा गया ऐतिहासिक हिंदू मंदिर, बनाया जाएगा कॉमर्शियल कॉम्पलेक्स

पेशावर, 13 अप्रैल। खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में पाकिस्तान–अफगानिस्तान सीमा के पास एक ऐतिहासिक हिंदू मंदिर को गिरा दिया गया है और उस स्थान पर एक वाणिज्यिक परिसर का निर्माण शुरू हो गया है, जो 1947 से बंद था, जब इसके मूल निवासी भारत चले गए थे। 'खैबर मंदिर' खैबर जिले के सीमावर्ती शहर लैंडी कोटाल बाजार में स्थित था, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में यह धीरे–धीरे लुप्त होता जा रहा था। इस स्थान पर निर्माण करीब 10–15 दिन पहले शुरू हुआ था। विभिन्न प्रशासनिक विभागों के अधिकारियों ने या तो हिंदू मंदिर के अस्तित्व के बारे में जानकारी होने से इनकार किया या दावा किया कि निर्माण नियमों के अनुसार हो रहा है।

लैंडी कोटाल निवासी प्रमुख कबायली पत्रकार इब्राहिम शिनवारी ने दावा किया कि मुख्य लैंडी कोटाल बाजार में एक ऐतिहासिक मंदिर था। उन्होंने कहा, 'मंदिर लैंडी कोटाल बाजार के केंद्र में स्थित था, जिसे 1947 में स्थानीय हिंदू परिवारों के भारत चले जाने के बाद बंद कर दिया गया था। 1992 में भारत में अयोध्या में बाबरी मस्जिद के विध्वंस के बाद कुछ मौलवियों और मदरसों ने इसे आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त कर दिया था।' इब्राहिम ने अपने बचपन को याद करते हुए कहा कि उन्होंने अपने पूर्वजों से इस मंदिर के बारे में अनेक कहानिया सुनीं।

मंदिर मौजूद था – उन्होंने कहा कि 'इस बात में कोई संदेह नहीं है कि लैंडी कोटाल में 'खैबर मंदिर' नाम का एक धर्मस्थल था।' पाकिस्तान हिंदू मंदिर प्रबंधन समिति के हारून सरबदियाल ने जोर देकर कहा कि गैर–मुसलमानों के लिए धार्मिक महत्व की ऐतिहासिक इमारतों की सुरक्षा और पुनर्वास सुनिश्चित करना जिला प्रशासन और संबंधित सरकारी विभागों की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि 'पुरातत्व और संग्रहालय विभाग, पुलिस, संस्कृति विभाग और स्थानीय सरकार पूजा स्थलों सहित ऐसे स्थलों की सुरक्षा के लिए 2016 के पुरावशेष कानून से बंधे हैं।'

पटवारी को नहीं जानकारी – डॉन अखबार ने लैंडी कोटाल के सहायक आयुक्त मुहम्मद इरशाद के हवाले से कहा कि खैबर कबायली जिले के आधिकारिक भूमि रिकॉर्ड में मंदिर का कोई उल्लेख नहीं है। उन्होंने मंदिर गिराये जाने के बारे में अनभिज्ञता प्रकट की। उन्होंने कहा कि 'लैंडी कोटाल बाजार में पूरी जमीन राज्य की थी।' लैंडी कोटाल के पटवारी जमाल आफरीदी ने दावा किया कि उन्हें मंदिर स्थल पर निर्माण गतिविधि की जानकारी नहीं है। सरबदियाल ने सुझाव दिया कि जो स्थान या तो अल्पसँख्यकों के इस्तेमाल में नहीं हैं या जर्जर हैं, उन्हें ध्वस्त करने की जगह सामाजिक कल्याण गतिविधियों में इस्तेमाल किया जा सकता है।

(अमर उजाला से साभार)

विश्व हिंदू परिषद, केरल प्रांत बैठक

विश्व हिंदू परिषद केरल प्रांत बैठक एर्नाकुलम में सपन्न हुई। इस बैठक में जिला मंत्री, अध्यक्ष एवं विभाग प्रांत के पदाधिकारी उपस्थित रहे। मंचासीन केंद्रीय संयुक्त महामंत्री श्री स्थाणु मालयन जी, केंद्रीय सहमंत्री श्री पी.एम नागराजन जी, क्षेत्रीय संगठन मंत्री केशव राजू जी, केरल प्रांत के अध्यक्ष श्री विजी थंबी जी, प्रांत मंत्री राजशेखरन जी उपाध्यक्ष श्रीमती प्रसन्ना जी उपस्थित रहीं।

प्रस्तुति : जयशंकर
sajikumarkcd@gmail.com

विहिप नंगल के प्रखंड अध्यक्ष की गोली मारकर हत्या विहिप बंठिडा जिला द्वारा विरोध प्रदर्शन

विश्व हिन्दू परिषद बठिंडा (पंजाब) द्वारा विहिप नंगल के प्रखंड अध्यक्ष विकास प्रभाकर की गोली मारकर अज्ञात लोगों ने हत्या कर दी। हत्या के विरोध में विहिप बंठिडा जिला द्वारा विरोध प्रदर्शन किया गया। विहिप के आव्हान पर 11 से 1 बजे तक बठिंडा बाजार बंद रहा, विहिप पंजाब के प्रदेश कार्याध्यक्ष सरदार हरप्रीत सिंह गिल ने कहा कि आरोपियों को तुरंत गिरफ्तार कर कड़ी सजा दी जाए, परिवार को 1 करोड़ रुपया मुआवजा दिया जाए, पत्नी को सरकारी नौकरी देने की मांग की गई। सरदार हरप्रीत सिंह गिल ने कहा कि पिछले कुछ समय से सोची समझी साजिश के तहत पंजाब का माहौल खराब किया जा रहा है। हिन्दू नेताओं की हत्या हो रही है। ऐसे में प्रदेश सरकार का दायित्व बनता है कि वह हर नागरिक की सुरक्षा सुनिश्चित करे और समाज विरोधी ताकतों का पर्दाफाश करे।

इस दौरान विहिप बठिंडा विभाग संगठन मंत्री साहिल वालिया, जिला अध्यक्ष नरेंद्र मितल, जिला सह मंत्री सतीश बंसल, गगन शर्मा, रोहित अरोड़ा एवं शहर के विभिन्न धार्मिक, सामाजिक संगठनों के लोग उपस्थित रहे।

ahluwaliasahil54@gmail.com

श्रीराम जन्मोत्सव पर कवि सम्मेलन

विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल की ओर से प्रतिवर्ष की भांति अशोकनगर के गांधी पार्क पर राम दरबार में रामनवमी के अवसर पर भव्य काव्य पाठ का आयोजन किया गया, जिसमें नवोदित कवि कुमार सानू ने अपनी हास्य फुलझड़ियों से कार्यक्रम की अच्छी शुरुआत की, तत्पश्चात दूधनाथ मधुकर ने ओज की रचना 'कफन तक न मिलेगा पाक में उनको दुकानों पर' गाकर श्रोताओं की तालियाँ बटोरी। युवा कवि जगदीश शर्मा सहज ने रामलला की शोभा में अपने गीत 'सहस्त्रों साल से बैठे दिलों में राम हैं सबके' छंदों से और सरस्वती वंदना से सबको मंत्रमुग्ध किया। एल एन सोनी ने अपने चिर परिचित अंदाज से पत्नी को माध्यम बना कर व्यवस्थाओं को उजागर किया। दिनेश जैन ने हास्य के साथ बुजुर्गों की व्यथा प्रस्तुत की तथा वरिष्ठ कवि दिनेश बिरथरे ने अपनी राष्ट्रीय रचना 'बलिदान हो गए बेटे जो उनके चिंतन में है पागल' पढ़कर मंच को ऊंचाई पर पहुँचाया, व्यंग्य के जानेमाने कवि महेश श्रीवास्तव ने अपनी व्यंग्य रचनाओं से शहर और देश की लचर व्यवस्था को आड़े हाथों लिया तथा कार्यक्रम का सफल संचालन किया। काव्य पाठ के दौरान मंच से नगर में श्री कृष्ण सरल की मूर्ति स्थापित किए जाने की मांग भी उठी। सभी श्रोताओं ने कवियों को खूब सराहा और आधी रात तक खूब तालियाँ बजाई। अंत में विश्व हिंदू परिषद के प्रांत प्रमुख डॉक्टर दीपक मिश्रा, नगर अध्यक्ष आलोक दुबे, पदाधिकारी विकास जैन बल्ली, जिनेश जैन एवं संजीव जैन, बजरंग दल के हेमंत जैन, श्रीमती सुधा श्रीवास्तव ने पधारे हुए कवियों का आभार व्यक्त किया एवं कवियों को माल्यार्पण और प्रतीक चिन्ह प्रदान कर, उन्हें सम्मानित किया।

deepakmishravhp@gmail.com

अशोक नगर में धर्मरक्षा निधि समर्पण

विश्व हिंदू परिषद अशोकनगर जिला द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी धर्म रक्षा निधि समर्पण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया जिसमें प्रत्येक कार्यकर्ता और सभी समाज के द्वारा समर्पण राशि दी जाती है, जो प्रांत से प्राप्त रसीद के माध्यम से सभी समाज जनों से समर्पण कर संग्रह किया जाता है और वह प्रांत को भेजा जाता है। प्रांत धर्म प्रसार प्रमुख डॉ. दीपक मिश्रा ने बताया कि सभी कार्यकर्ता धर्म रक्षा निधि समर्पण करें सभी समाज जनों से भी आहवान किया कि अधिक से अधिक संख्या में हिंदू धर्म रक्षा के लिए बहन–बेटी बचाने के लिए, लव जिहाद से बहनों को बचाने के लिए, लैंड जिहाद से समाज को बचाने के लिए, हिंदू धर्म की रक्षा के लिए संगठन काम कर रहा है और समाज में सेवा के काम भी विश्व हिंदू परिषद द्वारा किए जाते हैं। इस प्रकार से प्रत्येक वर्ष समरसता सम्मेलन किया जाता है। सभी समाज के प्रतिभावान बच्चों का सम्मान किया जाता है। विश्व हिंदू परिषद कार्यालय पर निशुल्क कोचिंग चलती है और पूरे देश में समाज सेवा के कार्य राष्ट्र जागरण के कार्य विश्व हिंदू परिषद द्वारा किए जाते

हैं, इसलिए गौ माता की रक्षा का कार्य हो, चाहे समाज का कोई भी क्षेत्र हो, उसमें विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल, मातृशक्ति, दुर्गा वाहिनी के कार्यकर्ता हमेशा समर्पित होकर कार्य करते हैं। इसलिए सभी समाज जन एवं सभी कार्यकर्ताओं से अनुरोध है कि सभी लोग आगे आकर धर्मरक्षा निधि समर्पण में भाग लेकर राष्ट्रहित व समाज हित में भामाशाह बनकर, दान देकर सहयोग करें, ऐसी अपेक्षा करते हैं।

deepakmishravhp@gmail.com

हनुमान जन्मोत्सव पर राजधानी दिल्ली में विभिन्न स्थानों में हनुमान चालीसा, सुंदरकांड, प्रभात फेरियां, शोभायात्राएं

नई दिल्ली, (23 अप्रैल) विश्व हिंदू परिषद (विहिप) की ओर से श्री हनुमान जन्मोत्सव के पावन अवसर पर राजधानी दिल्ली में विभिन्न स्थानों में हनुमान चालीसा, सुंदरकांड, प्रभात फेरियां, शोभायात्राएं और इसी प्रकार के अनेक कार्यक्रमों की श्रृंखला का आयोजन किया गया। जहांगीर पुरी क्षेत्र में ऐसी ही एक भव्य शोभायात्रा निकाली गई। विहिप इंद्रप्रस्थ (दिल्ली) के प्रांत मंत्री श्री सुरेंद्र गुप्ता ने इस यात्रा में भाग लेने वाले भक्तजनों और कार्यकर्ताओ को संबोधित करते हुए कहा कि कॉंग्रेस की विभाजनकारी नीतियों के कारण ही देश में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और विश्व हिन्दू परिषद का जन्म हुआ था। उन्होंने दिल्ली पुलिस पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि दिल्ली पुलिस के कुछ अधिकारी दिल्ली को मजहबी आधार पर बांटने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि दिल्ली के ऐसे अधिकारी ध्यान रखें कि हमने पाँच सौ वर्षों तक रामजन्मभूमि की मुक्ति के लिए संघर्ष किया है और उन सरकारों को भी बदलने का कार्य किया है जो इस मुक्ति में बाधा थी। दिल्ली के जो आला पुलिस अधिकारी दिल्ली को मजहबी आधार पर बांटने का काम कर रहे हैं, उन्हें दिल्ली से बाहर करने का काम विहिप ही करेगा।

श्री गुप्ता ने कहा कि दो वर्ष पहले हनुमान जयंती पर इसी जहांगीरपुरी में निकाली गई शोभायात्रा में जिहादियों ने हमला किया था और हिन्दू समाज के साथ–साथ दिल्ली की कानून व्यवस्था और प्रशासन को भी चुनौती दी थी। हिंदू समाज ने उस चुनौती को स्वीकार किया है। उन्होने मंच से घोषणा करते हुए कहा कि जल्दी ही विहिप दिल्ली बचाओ, संविधान बचाओ यात्रा शुरू करेगा। हम किसी भी कीमत पर दिल्ली को मजहबी आधार पर बंटने नहीं देंगे और हर वर्ष जहंगीरपुरी में इकट्ठे होकर इस यात्रा को पूर्ण करने के लिए संघर्ष करेंगे, चाहे हमें इसमें कितना भी समय लगे।

सवा लाख लोगों को भोजन कराके विहिप की राम रसोई का समापन

गंजबासौदा। बीते 10 अप्रैल से वेत्रवती तट पर स्थित नौलखी मंदिर में चल रहे जगदीश स्वामी एवं राम–जानकी की मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव, श्री राम अतियज्ञ एवं राम कथा के कार्यक्रम में विश्व हिन्दू परिषद द्वारा पहुंचने वाले सभी श्रद्धालुओं के लिए निःशुल्क भोजन सेवा राम रसोई शुरू की थी राम रसोई प्रातः एवं सायं दोनों समय श्रद्धालुओं को निःशुल्क भोजन कराया जा रहा था बाद में श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या को देखते हुए राम रसोई को अनवरत कर दिया था। राम रसोई प्रातः 11 बजे से आरंभ होकर रात्रि के 11 बजे तक चलाई जाती थी जिसमें प्रतिदिन हजारों की संख्या में धर्म प्रेमी श्रद्धालु एवं व्यवस्था में लगे विभिन्न विभागों के कर्मचारी भोजन करते थे। 9 दिनों तक चली राम रसोई में सवा लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने भोजन प्रसादी ग्रहण की। इस राम रसोई का शुभारंभ श्री महंत राम मनोहर दास महाराज ने उप यज्ञाचार्य पं. केशव प्रसाद शास्त्री की उपस्थिति में किया था। साथ ही समय–समय पर वे स्वयं भी राम रसोई पहुँचकर विश्व हिन्दू परिषद– बजरंग दल कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करते रहे और उनके कार्य की सराहना में उन्होंने कहा की उक्त आयोजन में दूर–दूर ग्रामांचलों से ग्रामवासी कथा श्रवण करने एवं दर्शन करने आते रहे। विहिप, बजरंग दल ने सबको भोजन कराके बहुत पुण्य का काम किया है, पूर्व में भी विहिप द्वारा यहां भोजन सेवा दी गयी थी, नगर में कोई भी धार्मिक आयोजन हो, विहिप–बजरंग दल के कार्यकर्ता हमेशा सेवा कार्य करने हेतु तत्पर रहते हैं।

sharmabhishek.guruji99@gmail.com

केरल में प्रांत बैठक के अवसर पर उपस्थित प्रांत के पदाधिकारी व कार्यकर्ता

गंज बासौढा में वेत्रवती तट पर स्थित नौलखी मंदिर में चल रहे जगदीश स्वामी एवं राम-जानकी की मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव, श्री राम अतियज्ञ एवं राम कथा के कार्यक्रम में विहिप द्वारा 10 दिनों तक नि:शुल्क भोजन वितरण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ

ऋषिकेश में रामोत्सव के अवसर पर बजरंग दल द्वारा कुश्ती प्रतियोगिता का आयोजन

अशोकनगर (म.प्र.) में धर्मरक्षा निधि समर्पण कार्यक्रम

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6
email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 28.04.2024
प्रेषण तिथि : 29-30 (अग्रिम-पाक्षिक)

नांदेड जिला (देवगिरी प्रांत–महाराष्ट्र) के किनवट तहसील में गोर बंजारा–लभान समुदायों के नायक–कारभारी, पुजारियों के सम्मेलन को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे। कार्यक्रम में 140 गाँवों से 600 से अधिक लोग गोरक्षा–धर्मरक्षा तथा परंपराओं की रक्षा का संकल्प लेने के लिए पूज्य संतों के साथ एकत्र आए।

उंगोलु और नेल्लूरु दो स्थान दक्षिण आन्ध्र प्रांत (जिल्ला केंद्र) पर विश्व हिंदू परिषद ने सामाजिक समरसता कार्यक्रम आयोजित किया। मुख्य वक्ता के रूप में विहिप के सह संगठन महामंत्री श्री विनायक राव देशपांडे ने संबोधित किया। उन्होंने श्री बाबू जगजीवन राम द्वारा राष्ट्र और हिंदू धर्म की रक्षा के लिए दिए गए योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला।

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी